वर्ष 28, अंक 11 नवम्बर-2026 ₹ 3/-

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी ।

शबरी

Shabari Siksha Samachar शिक्षा समाचार

तमिलनाडु के सेलम जिले से पिछले 28 वर्षों से बिना किसी अनुदान के निरंतर प्रकाशित होनेवाली, एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका है ।





सशक्त ठहरे निराला, हाँ सत्ती नायनार ।
सभक्ति सेवा कर सतत, बने रहे दमदार ।।

JOIN Vani Vikas

Spoken Hindi Examination

Learn Spoken Hindi in Simplest Way

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள்

வாய்மொழி தேர்வு

முயன்றால் முடியாதது எதுவுமில்லை
முடங்கிக் கிடந்தால் எது முடியும் ?
எழுந்து நடந்தால் இமயமும் படியும்
மொழியொன்று கற்றால் வழியொன்று
மொழிகள் பலகற்றால் பல வழியுண்டு
வாருங்கள் சபரியுடன் வழிகாட்டுகிறோம்
வருங்காலம் வளமாகிட வழிகாட்டுகிறோம்
வாருங்கள் வாணிவிகாஸில் சேருங்கள்
ஹிந்தியை இதயபூர்வமாய் பேசிட வாருங்கள்



- **Eight** Graded Levels
- No Previous Hindi Qualifications
- Certificate Issued For Each Level

SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
Second Agraharam, Salem - 636 001.
Visit us at https://shabari.in/

पढ़ो मन भरके

शबरी शिक्षा समाचार

वर्ष 28, अंक 11 | मूल्य ₹ 3/- | नवम्बर - 2026

प्रधान संपादक

एम. वेंकटेश्वरन

संयुक्त संपादक

आर. जयकरन

सहायक संपादक

आर.जे. संतोष कुमार

कार्यालय

Shabari Siksha Samachar

R.O.: 37, First Agraharam, Salem - 636 001.
A.O.: Shabari Palace,
193 & 194, Second Agraharam,
Salem - 636 001. Tamil Nadu. India.
Phone : 94431-65414, 94433-65414
e-mail : shabarisamachar@gmail.com

संस्थापक व प्रकाशक

Published & Owned by M. Sridhar, on behalf of SHABARI SIKSHA SAMACHAR, 37, First Agraharam, Salem - 636 001 & Printed by D. SivaKumar at Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636001.

समस्त न्यायिक विवादों के लिए क्षेत्राधिकार सेलम होगा । शबरी शिक्षा समाचार में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशन तिथि से एक माह के अंदर की जा सकती है, बाद में किसी भी पूछताछ पर जवाब हेतु बाध्य नहीं । सभी सामग्री से संपादक सम्मत या सहमत हो यह ज़रूरी नहीं ।

SHABARI BOOK SALES

Whatsapp : 9443165414

Office Phone : 9842765414

Office Phone : 9443365414



VANI VIKAS NUMBER

✆ 88703-55599 Office Hrs : 10 AM - 5 PM

Whatsapp & ✆ 88704-55599

इस अंक में

संपादक की कलम से 5
अनमोल वचन 6
मरना चाहते हैं तो 7
चलना कहाँ है ? 8
फैशन या दिखावा नहीं हमारी प्राथमिक 10
गज़लें 11
सच्ची पूजा 12
वायरल खबर 13
असली मदद 14
आशा 14
योग एक यात्रा, समझें जीवन जात्रा 15
लोन के चक्रव्यूह में फँसा कर्मचारी 16
गज़ल 17
अच्छे विचार, मधुर वाणी 18
मुस्कुरा रही मातारानी 19
दीपावली के दोहे 20
बहे नित प्रेम की गंगा 21
माया 21
प्रकृति का हाइकु 22
मिलती नहीं हर दर्द की दवा 23
हिन्दी का मान 23
माता की विदाई 24
दीप जला लो 24
गज़ल 25
हम कुछ ना कहेंगे 25
महान संत शिव भक्त–तमिल नायनमार 28
शरद पूर्णिमा – अंतर्मन का चाँद . 30
दो कविताएँ 31
तुम हृदय की रागिनी हो 32
हार नहीं मानूँगा 32
आँखों में बसना भोले 33
मेरा पुराना स्कूटर 33
दीवाली 34
आज दीवाली है 34
आई लव यू किसे कहूँ 35
सारे जग की क्षुधा मिटाता... 35
दृष्टि और दृष्टिकोण 36
अब मैं मुस्कुरा लेती हूँ ! 36
सरस्वती आवाहन 37
खुदा देखता नहीं 37
पाठकों के पत्र 38
नवांकुर 42
पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम् . 44
தமிழமுது 46
அருள் உலா 47

वाणिविकास्ं वायंमोझिंत् तेर्वु विवरम्

तेर्वु नडेपेरुम् मातम्	तेर्वु नडेपेरुम् तेदि	तेर्वु विण्णप्पंगळ् वळंगुम् नाळ् कडेसि तेदि	₹10/- तामतक् कट्टणत्तुडन् सेलुत्त
ஜனவரி-2027	24-01-2027	01-10-2026 to 30-11-2026	05-12-2026
ஏப்ரல்-2027	18-04-2027	01-01-2027 to 28-02-2027	05-03-2027
ஜூலை-2027	18-07-2027	01-04-2027 to 31-05-2027	05-06-2027
அக்டோபர்-2027	17-10-2027	01-07-2027 to 31-08-2027	05-09-2027

वाणी विकास् तेर्वुकळुक्कुरिय विण्णप्पंगळ् आन्लैन् (ONLINE) वायिलाक मट्टुमे (https://shabari.in) एर्ट्रुक् कॊळ्ळप्पडुम्.

★ D.D. ***मर्ट्रुम् मणियार्ड र् एर्ट्रुक् कॊळ्ळप्पडमाट्टादु.***

our web portal @ **https://shabari.in**

✍ संपादक की कलम से ...

प्रिय पाठक बन्धुवर, सस्नेह वन्दे ।

मानव के जीवन में उसे सिर्फ अपने साथ ही नहीं, अपने परिवारवालों के साथ, समाज के विभिन्न क्षेत्र के लोगों के साथ भी जीना पड़ता है । आदमी अपने घर में कम समय रहता है । रात को सोने का जो समय है उसके अलावा इसका ज्यादातर घर से बाहर ही रहता है ।

पुराने जमाने में लोग संयुक्त परिवार में जिया करते थे । घर में अनेक लोगों के रहने के कारण सहिष्णुता मानव के जीवन में अपने आप स्थान पा लेती थी । आजकल के एकल परिवारों में जहां माता-पिता के साथ ज्यादातर एक ही बच्चा पलता है तब उसमें स्वार्थता की मात्रा अधिक हो जाती है । दो बच्चे के रह जाने पर भी हर बात में चिढ़ना आजकल के लोगों का स्वभाव बन चुका है । हर बात में गुस्सा करना और गुस्से में जो मन चाहे कर देना आज की पीढ़ी की आदत बन गई है ।

गुस्सा करनेवाले गुस्से में जो भी करते हैं उसके लिए बाद में जरूर पछताते हैं । सबको यह बात पूरी तरह पता है कि गुस्सा सामनेवाले को नुकसान करने के साथ-साथ गुस्सा करनेवाले का भी बहुत अधिक नुकसान कर देता है ।

दुनिया में ऐसा एक भी उदाहरण नहीं है कि गुस्सा करने से बात बन जाती है । गुस्से से बात ही नहीं रिश्ते भी बिगड़ जाते हैं । गुस्सा करनेवाला अपने आप को खो जाता है और सामनेवाले के साथ-साथ अपने आप को भी घोर रूप से घायल कर देता है ।

हम यह कहना नहीं चाहते हैं कि गुस्सा कम करो या गुस्सा करने का नाटक करो । यह भी तो हानिकारक है । हम तो यही कहना चाहेंगे कि गुस्सा करके कुछ होनेवाला नहीं है तो गुस्सा करना ही छोड़ दो । अपने मन का प्यार जितना हो सके उतना लोगों तक पहुँचाओ । हर दिल में स्थान पाने का और हर कार्य में जीत पाने का एक ही मार्ग है गुस्सा त्याग दो और प्यार को उचित स्थान दो । लोका समस्ता सुखिनौ भवंतु ।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !!



अनमोल वचन

अंगों का क्षय

तमिल संत महान तिरुवल्लुवर के अनुसार –

वियोग के दुख को सिर्फ मुझे देखकर मुझसे बहुत दूर चले गए उस प्रेमी की याद में, हमेशा रो-रो कर दुख भोगनेवाली मेरी कांतिहीन आँखें, मेरे सामने सुगंधित फूलों को देखकर शर्म अपना कर नीचे झुक जाती है ।

मेरे प्रेमी जो मुझे पहले बहुत चाहते थे, अब मुझसे दूर चले गए । उनकी क्रूरता को इस जगत को समझाने के लिए मेरी आँखें रोग ग्रस्त होकर आँसू बहा रही हैं ।

शादी के तुरंत बाद खुशी से फूले मेरी बाहें, मेरे प्रेमी के दूर चले जानेवाले सच को दुनिया को बताने लायक होकर, अभी दुबले हो चुके हैं ।

प्रेमी के मुझे छोड़ कर जाने पर उत्पन्न शोक से अपनी सुंदरता खोकर, दुबले हो जानेवाले मेरे बाहों से चूड़ियाँ निकाल कर नीचे गिर जाती है ।

दयाहीन मेरे प्रेमी की क्रूरता को मेरे हाथ से निकाल कर नीचे गिरनेवाली मेरी चूड़ियाँ के साथ मेरी पुरानी सुंदरता से भरी बाहें दुबले होकर इस दुनिया को समझाते हैं ।

प्रेमी के मुझे छोड़ कर जाने पर उत्पन्न शोक से अपनी सुंदरता खोकर, दुबले हो जानेवाले मेरे बाहों से चूड़ियाँ निकाल कर नीचे गिर जाती है । इसे देख कर लोग मेरे प्रेमी को क्रूर कहते हैं, और इसे सुनकर मेरा दिल दुखित हो जाता है ।

है मेरा दिल ! दयाहीन क्रूर प्रेमी के पास जाकर, उसकी दूरी से दुख भोगकर दुबले हो जानेवाले मेरे बाहों के दुख बाँटने से क्या लाभ है ? कोई लाभ नहीं है ।

अपने सिर को ढके हुए, उसके हाथों को हटाने से चूड़ियाँ पहननेवाली उस लड़की के प्रकाशमय माथे पर वियोग रोग का रंग दिख रहा है ।

प्रेमी जब कस कर उसे गले लगा रखा था तब उनके बीच में हवा के घुस जाने पर, उसे वियोग समझ कर, उस लड़की के वर्षा जैसी आँखें वियोग रोग से रंग बदल लिए थे ।

प्रेमिका के प्रकाश भरा माथा, अपने प्रेमी के वियोग से दुख भरा रंग अपना लेने पर उसकी आँखें उससे पहले उस रोग को ना अपनाने पर बहुत दुखित हो रही थीं ।

मरना चाहते हैं तो

– साहित्य रत्न श्री. जेमि,
कोवै, तमिलनाडु

मरना चाहते हैं तो मरना है सबको ऐसे
रोग के कारण ना हो मृत्यु, देख लो वैसे
रोग को साथ लेकर आते नहीं कोई यहाँ
रोग को मार्ग बनाकर जाते हैं अनेक यहाँ
हर कोई जो आ ही जाते हैं चले जाते हैं
किसी को यहीं रोकती नहीं कभी दुनिया
कैसे लोग जाते छोड़कर जानो यह दुनिया
रोग के कारण मिटना कभी नहीं है हे भैया ।

भागते रह जाते हैं पैसे के पीछे पागल जैसे
आगे पीछे नहीं सोचते हैं बस पैसे के पीछे
काम को भगवान मानकर घूमनेवाले भी
काँपते रह जाते हैं मौत के आते ही
मन लगाकर काम करना कभी गलत नहीं है
मर मर कर काम करना सही कभी नहीं है
पैसा जो कमाया जाता है कहो वह कहाँ जाता है ?
रोगी जब बन जाता है अस्पताल में दे जाता है ।

जीना वह सिर्फ जीना है जीकर चले भी जाना है
अपने लिए जो समय नहीं देता क्या ले जाता है ?
सुख वह सुख नहीं होता है जो पैसों से आँका जाता है
दिल तोड़कर जीना क्या जीना दुख ही का रिश्ता बनता है
हँसी खुशी को जो अपनाता है वही जीवन पाता है
हर पल का लाभ जो पाता है वही सही जीवन पाता है
शरीर को जो पालता है सुखपूर्वक मृत्यु पाता है
हर हर नाम जो लेता है शिव पद जरूर पाता है ।

चलना कहाँ है ?

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार,
कोवै, तमिलनाडु

शहर का रेलवे स्टेशन हमेशा लोगों से भरा रहता है । खास करके प्रातः काल के समय में बहुत सारे रेलों के निकलने के कारण बड़ी भीड़ बनी रहती है । वहाँ एक आदमी फोन में बात कर रहा था । हाँ मैं पहुँच चुका हूँ तिरुमला जानेवाली गाड़ी में, सही गाड़ी में बैठा हूँ आप निश्चिंत होकर आ जाइए । राघव स्टेशन पहुँचकर सही प्लेटफॉर्म में पहुँच गया । उसे अपने सीट तक जाना था ।

रेल के इंजन के तुरंत बाद फर्स्ट एसी का डिब्बा था । उसके बाद दो सेकंड एसी के डिब्बे फिर तीन थर्ड एसी के डिब्बे थे । फिर आनारक्षित डिब्बे दो थे । उसके बाद शुरू हुआ डी–13 उसे डी–1 में जाना था । वह सोचने लगा । यहाँ के जितने सारे डिबे हैं सब में बैठनेवाले आदमी ही है । कहीं कोई देवता या किसी राक्षस को स्थान नहीं दिया जा रहा है ना ही कोई जानवर या यहाँ सेट पाते हैं । लेकिन पैसे के हिसाब से कुछ लोग आम पेटी में आते हैं कुछ और आरक्षित पेटी में आते हैं जिनके पास पैसे हैं वह अपने सुविधा अनुसार थर्ड एसी से फर्स्ट एसी तक आराम से आते हैं ।

चलती गाड़ी का नाम जिंदगी है । रेलगाड़ी भी चलती रहती है । कभी–कभी किसी स्टेशन पर रुकती है लेकिन वह अपनी आखरी स्टेशन तक बिना रुके चलती रहती है । बीच रास्ते में वह बहुत कुछ देखती है । कभी वन के जरिए गुजरती है तो कभी नदी नालों को पार करती है । मानव का जीवन भी ऐसे ही चलता है । सुख दुख से भरा रहता है कभी शांत कभी गरम हो जाता है। फर्क सिर्फ इतना ही है कि रेल का रास्ता पहले से निश्चित है लेकिन जिंदगी में कब नया मोड़ आएगा यह किसी को पता नहीं चलता ।

सोचते सोचते राघव डी–1 तक पहुँच गया । वहाँ एक नौजवान लड़का रास्ता रोककर खड़ा था । इतना बेशर्म लग रहा था कि जैसे वह अपने घर के दरवाजे को पकड़ कर आराम से किसी से फोन में बात कर रहा था । राघव को गुस्सा आया लेकिन उसने कुछ नहीं कहा झुककर डिब्बे के अंदर जाकर बैठ गया । राघव का दोस्त वहाँ नहीं था उसने तुरंत उसे फोन किया । मैं यहाँ अपने सीट पर हूँ तुम कहाँ बैठे हो ? किसी को पूछो डी–1 कहाँ है और जल्दी आ जाओ पाँच मिनट बाकी है । फोन मत काटो मैं नीचे उतर के देख रहा हूँ बात करते–करते आना जल्दी आ जाना । उसका दोस्त अनारक्षित डिब्बे से उतरकर दौड़ते हुए आने लगा । सही ट्रेन पर तो बैठा था लेकिन सही सीट पर नहीं । जिंदगी में भी बहुत सारे लोग ऐसे कर जाते हैं अपना जगह कभी पहचान नहीं पाते हैं । राघव उसके साथ ट्रेन में बैठ गया ।

तभी पिछले सीट से लड़ाई की आवाज आ रही थी । लगभग 55 साल का वह आदमी जो पीला वस्त्र पहन रखा था उसे एक युवक लड़ रहा था । डी–3 में बैठने के

बदले वह गलती से डी-1 में आ गया था । इस आदमी ने उसे बेवकूफ कर दिया जिससे वह नौजवान चिढ़ गया था । टीटीआर और अन्य यात्री के समझाने पर भी वह आदमी लड़ता रहा । नौजवान उसे छोड़कर डी-3 तक पहुँच गया । लेकिन यह तो बड़बड़ाता रह गया । पीला वस्त्र वही पहनते हैं जो व्रत रखते हैं । अपने माथे पर वह तिलक भी लग रखा था । लेकिन इतने सारे बुरे शब्द लिखे निकालने लगे उसके मुँह से कि पास बैठी पत्नी सिकुड़ कर बैठ गई ।

गाड़ी अपनी गति में जा रही थी । पीछे से आवाज आई - चाय के नाम से किस नाली का पानी पिला रहा है ? पैसा ले रहा है कि मुफ्त में दे रहा है ? वह आदमी था, चायवाले से लड़ रहा था । उसे गाली देते हुए चायवाला आगे बढ़ गया । हम दोनों गाना सुन रहे थे, गाड़ी आगे बढ़ रही थी ।

मोबाइल फोन के आने के कारण लोगों की दूरी अपने आप बढ़ गई । कुछ लोग गाना सुन रहे थे तो कुछ लोग कुछ और देख रहे थे गाड़ी में नि:शब्दता थी । फिर से आवाज आने लगी वही आदमी शायद अपने बच्चों पर चिल्ला रहा था । लड़का जोर-जोर से रोने लगा ।

थोड़ी देर बाद वही आदमी फिर से चिल्लाने लगा । उसे सीट से गुजरते गुजरते किसी आदमी का हाथ गलती से लग गया था । यह हाथ में इतना चिल्ला रहा था कि उसे काटकर टुकड़े-टुकड़े में कर देगा । साथ में जो लोग बैठे थे सबके सब चिढ़ गए थे ।

हाथ धोते हुए वहाँ लड़ाई, दरवाजे के पास 1 मिनट रुक वहाँ पर भी लड़ाई वह हाथ भी तो हर एक पर चिल्ला रहा था । राघव कहने लगा बेचारी औरत पता नहीं इस आदमी के साथ कैसे अपनी जिंदगी चला रही है ? यह तो हर कहीं लड़ता फिरता है और गुस्सा करता है रहता है ।

आखिर गाड़ी तिरुमला स्टेशन पर पहुँच गई । यात्रियाँ शब्द गाड़ी से उतरकर मंदिर जाने की तैयारी कर रहे थे । उसकी पत्नी वहाँ के बेंच पर बैठ गई । आदमी फिर से चिल्लाने लगा - यहाँ क्या बैठी है ? चलना नहीं है क्या मंदिर ? चलो जल्दी करो ।

पत्नी चिढ़ गई थी । चलना कहाँ है ? मंदिर जाकर भी क्या पाओगे ? घर से निकलने से आप तक कितने सारे लोगों के मुँह लगे हो ? इतने सारे जनों का दिल दुखाकर तुम भगवान से क्या माँग सकते हो ? तुझे क्या लगता है भगवान तेरा आशीर्वाद करेंगे । तेरा मुँह तक नहीं देखेंगे । मुझे तेरे साथ मंदिर नहीं जाना है मैं यही ठीक हूँ । अगली गाड़ी में मैं अपने पुत्र के साथ घर जा रही हूँ । तुझे जाना है तो जाकर आ जाना । लेकिन एक बात याद रखना । भगवान का आशीष उन्हीं को मिलता है जो कभी लोगों का दिल जाने अनजाने में भी नहीं दुखाता है । आदमी का चेहरा उतर गया । वह कुछ बोल नहीं पाया चुपचाप अपनी पत्नी के पास जाकर बैठ गया । हमें आगे जाना था । हम निकल गए आखिर चलने का नाम जिंदगी है ।



फैशन या दिखावा नहीं हमारी प्राथमिक आवश्यकता है

– श्री. लिली मित्रा, फरीदाबाद, हरियाण

एक अच्छी आदत शुरू न कर पाने के कितने बहाने हम दे पाते हैं, हैरत होती है ! जितने बहाने हम सोचते हैं उतनी देर में शायद वो अच्छी आदत शुरू की जा सकती है... नहीं ? मैंने ये विचार कई बार किया है । फिर वो चाहे अपने स्वास्थ्य के प्रति अपना कर्तव्य हो या धरती माँ के बिगड़ते स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होने का धर्म हो । और आप यदि बारीकी से सोचें तो पाएँगे कि – अधिकांश लोग इन दोनों ही मामलों में बहुत ढिलाई बरतते हैं ।

ऐसा ही एक विषय है जो पृथ्वी की पारिस्थितिकी को बहुत तेजी से विषाक्त बना रहा है – प्लास्टिक कचरा ।

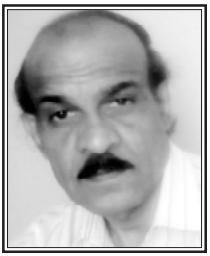
मुझमें ये जागरूकता आई तो चार–पाँच साल पहले पर इसे कार्यरूप में परिणीति मैं इस वर्ष दे पाई । वही बात कि – अच्छी आदतें शुरू न करने के सौ बहाने होते हैं हमारे पास । खैर मेरे इस संकल्प की परिणिति थोड़ी परिश्रमजन्य रही परन्तु परिणाम आत्मिक संतोष से परिपूर्ण है ।

करीब दो साल से मैंने रसोई के गीले कचरे जैसे सब्ज़ी के छिलकों, चाय–कॉफी, अंडे के छिलकों आदि से जैविक खाद बनाना शुरू किया अब मुझे अपनी छोटी–सी ही सही पर हरी–भरी बगिया के लिये खाद मिल जाती है ।

इसी तरह अब प्लास्टिक की पन्नियों, दूध–दही, तेल की थैलियों, दंत–मंजन, कॉस्मेटिकवाले प्लास्टिक से बने हर तरह के कचरे को धोकर सहेज कर रखने की आदत हो गई है । फिर मैने सोशल मीडिया पर इनके उचित निस्तारण के लिए कार्य करनेवाली संस्थाओं का पता लगाया, और अब... मुझे बहुत अच्छा अनुभव हो रहा है... ये सोचकर कि मैं पृथ्वी की पारिस्थितिकी को और बुरी हालत में न जाने देने के लिए अपना अंशदान करने लगी हूँ, देर से ही सही ।

अपनी सोसाइटी में भी मैं इस आवश्यक जागरूकता को लाने का प्रयास करना शुरू किया है पर फिर वही बात... अच्छी आदतें न शुरू कर पाने के सौ बहाने । पर लोगों को ये समझना होगा कि इस विषय पर भाषणबाजी, लेखनबाजी करने का हक़ अब उसी का हो जिसकी दिनचर्या का हिस्सा धरती माँ के खस्ता स्वास्थ्य की तीमारदारी करना हो ।

इस लेख में स्व का उदाहरण सिर्फ इसलिए लिखा क्योंकि मेरे लिए अब ये दिन के तमाम कामों की तरह एक जरूरी काम है । ये विषय अब फ़ैशन या दिखावा नहीं, मेरी आपकी और हर एक इंसान की जिम्मेदारी नहीं धर्म है । इसे पूजा-पाठ और अन्य धार्मिक अनुष्ठानों की तरह पालन किया जाना अनिवार्य है ।



गज़लें

– श्री. नवीन माथुर पंचोली,
अमझेरा, धार, म.प्र.

– 1 –

वह मेरा हौसला बढ़ाता है ।
या मेरी बात आज़माता है ।
मैं उसके साथ साथ चलता हूँ,
मुझसे वह दूरियाँ बनाता है ।
ये भला कैसी ख़बरदारी है,
जो मेरा नाम भूल जाता है ।
हाथ मैं उसके थाम लेता हूँ,
मुझसे वो पैंतरे लड़ाता है ।
ऐसा कैसा मिजाज़ है उसका,
ज़ख्म देकर भी मुस्कुराता है ।
सब जवाबों को भूलकर मेरे,
रोज़ मुद्दे नए उठाता है ।
रोज़ सुनता तो है सभी मेरी,
बात अपनी कही चलाता है ।

– 2 –

हम जिन्हें राह दिखाने निकले ।
लोग वो हमसे सयाने निकले ।
बात करते हैं वो शराफ़त की,
लोग जो हद से पुराने निकले ।
जो हमारे नहीं तुम्हारे भी नहीं,
आज वो सबके ठिकाने निकले ।
वो फिसलना, वो संभलना उनका,
ये तो सब उनके बहाने निकले ।
हमको अक्सर ही जो मिले तन्हा,
साथ उनके तो ज़माने निकले ।
जो सदाएँ थी सभी भूली सी,
लोग फिर उनको सुनाने निकले ।
बात सारी वो जानी-अनजानी,
आज फिर सबसे जताने निकले ।



लघुकथा

सच्ची पूजा

– श्री. राजेन्द्र परदेसी,
लखनऊ, उ.प्र.

मोहल्ले के बच्चे दयाशंकर जी को 'अंकल' कहते थे । रिटायरमेंट के बाद उनका नियम था – हर महीने पेंशन से दो सौ रुपये एक डिब्बे में रख देना । दशहरे पर जब बच्चे दुर्गा माता की मूर्ति के लिए चंदा माँगने आते, तो उनका चंदा सबसे अलग होता – पूरे साल की बचत का फल ।

इस साल भी डिब्बा भर चुका था । दो दिन बाद पूजा थी ।

दोपहर में प्रेस वाली शांति की बेटी नन्ही कपड़े लेने आई । कपड़े देने से पहले ही वह बोल पड़ी, ''अंकल, मेरी आठवीं की किताबें दिला देंगे ? मम्मी के पास अभी पैसे नहीं हैं । एक महीने बाद दिलाने को कह रही हैं । एक महीना हम कैसे पढ़ेंगे ?''

उसने किताबों की लिस्ट सामने रख दी । उसकी आँखें झुकी थीं ।

दयाशंकर जी लिस्ट देखकर उठे और वही डिब्बा निकाल लाए ।

सोचा – पैसे माँ के लिए ही तो जोड़े हैं । और बच्ची को पढ़ाना भी माँ सरस्वती की ही पूजा है । दोनों माँ ही तो हैं । कोई भी माँ मदद करने पर नाराज नहीं होती ।

उन्होंने पैसे निकालकर नन्ही के हाथ में रखे, ''जा बेटी, आज ही सारी किताबें ले आ ।''

नन्ही की आँखें भर आईं । वह पैसे कसकर पकड़कर बाजार दौड़ गई ।

शाम को वह किताबों का पैकेट लेकर आई, ''अंकल, देखिए, यही किताबें लाई हूँ ।''

नन्ही के चेहरे पर चमक थी और दयाशंकर जी के भीतर भाव था – माँ सरस्वती ने आज बड़ी कृपा की । दुर्गा पूजा पर अपनी ही पूजा का अवसर दे दिया ।



लघुकथा

वायरल खबर

– श्री. शिखर चंद जैन,
कोलकत्ता, प.बं.

गाँव के नुक्कड़ पर लगी रामू काका की चाय की दुकान पर आज बहुत गहमागहमी थी । रमेश अपने स्मार्टफोन पर एक वीडियो देखकर चिल्लाया, ''देखो-देखो ! पड़ोस के गाँव में मुर्गियों में नई बीमारी आई है, इससे इंसानों को भी खतरा है । यह वीडियो वायरल हो रहा है !''

यह सुनते ही चाय पी रहे लोगों में हड़कंप मच गया । कोई पोल्ट्री फार्म बंद करने की बात करने लगा, तो कोई शहर भागने की ।

रामू काका ने रमेश से पूछा, ''यह खबर तुम्हें किसने दी ?''

''अरे काका, व्हाट्सएप ग्रुप में आई है और फेसबुक पर भी सब यही शेयर कर रहे हैं ! इंटरनेट पर लिखा है, तो सच ही होगा ना ?'' रमेश ने आत्मविश्वास के साथ कहा ।

तभी वहाँ गाँव के डॉक्टर साहब भी चाय पीने आ पहुँचे । लोगों की चर्चा सुनकर उन्होंने अपना फोन निकाला और स्वास्थ्य विभाग की आधिकारिक वेबसाइट खोली ।

उस पर ऐसी कोई सूचना नहीं मिली ।

डॉक्टर साहब ने सबको वेबसाइट दिखाते हुए कहा, ''भाईयों, यह खबर पूरी तरह झूठी है । यह तीन साल पुराना एक एडिट किया हुआ वीडियो है, जिसे किसी ने अफ़वाह फैलाने के लिए दोबारा शेयर किया है । सरकार ने भी इसका खंडन किया है ।''

रामू काका ने रमेश के कंधे पर हाथ रखा और बोले, ''बेटा, आज के दौर में सच तक पहुँचने के लिए सिर्फ इंटरनेट नहीं थोड़ी समझदारी भी चाहिए । आगे से पहली उंगली शेयरवाले बटन पर नहीं, सच जाननेवाले बटन पर दबाना ।''

असली मदद

– डॉ. शिखा अग्रवाल,
जयपुर, राजस्थान



दीपावली के दिन सुबह से ही बाजार में जबर्दस्त भीड़ थी । मिठाई की दुकानों पर लोग ढेरों मिठाई पैक करवा रहे थे तो रेडीमेड कपड़ों की दुकान से लेकर पटाखे और फूलवालों तक को दम मारने की फुर्सत नहीं थी ।

वहीं सड़क किनारे पटरी पर दो छोटे बच्चे, छीतर और उसका भाई; पूजा का सामान रूई, लक्ष्मी जी की फोटो, दीपक आदि लेकर बैठे थे । वे दोनों हर आने जानेवाले से सामान खरीदने की मनुहार कर रहे थे । पर बड़े-बड़े पैकेटों से लदेफदे लोग या तो उन्हें हिकारत से देख कर आगे बढ़ रहे थे या फिर दस बीस रुपये के लिए मोलभाव कर रहे थे ।

वे दोनों बच्चे हसरत भरी नजरों से कभी पटाखे तो कभी मिठाई की दुकान को देख रहे थे । छीतर सोच रहा था कि अगर कुछ सामान बिक जायेगा तो वो भी दीवाली पर थोड़ी सी मिठाई और पटाखे लेकर घर जायेगा ।

दोपहर में कुछ बुजुर्ग महिलाओं का ग्रुप वहाँ आया । उन में से कुछ महिलाएँ एक बड़ी सी दुकान की तरफ बढ़ने लगीं तो एक महिला ने टोका, तुम लोग तो दानधर्म और समाज सेवा की बात करती हो फिर क्यों बड़ी दुकान से सामान लेने जा रही हो ? असली मदद पटरी पर बैठे इन बच्चों से सामान खरीदना है जिस से इनके घर भी दीपक जल सके उन महिलाओं द्वारा खरीदे सामान से मिले पैसे गिनते हुए छीतर की आँखों में खुशी के दीप जल उठे ।

आशा

– श्री. पूरवी तालुकदार,
बेंगलुरु, कर्नाटक



कभी-कभी मन होता है,
मैं पंछी बन जाऊँ,
दो पंख लगाकर
दूर-दूर तक उड़ती फिरूँ ।
तिनका-तिनका ढूँढ़कर मैं,
एक छोटा-सा घर बनाऊँ,
दुःख-दर्द से मुक्त होकर,
आज़ाद पंछी बन जाऊँ ।



योग एक यात्रा, समझें जीवन जात्रा

– श्री. दिनेश कुमार,
चेन्नै, तमिलनाडु



मैं योगा करने बैठा ही था कि ध्यान एकाग्रचित होने लगा
मन शरीर को कुछ अलग ही अजीब अहसास होने लगा
मुझे दिख रहा था कि मृत शरीर मेरा, मेरे ही सामने पड़ा है
जिद अकड़ अभिमानी दिनेश शरीर, यूँ जमीन पर पड़ा है



देखा फिर शरीर विखंडन की प्रक्रिया दिखना ही शुरू हुई
शरीर के पाँचों तत्व अपने ही मूल स्वरूप को पाने लगे हैं
देखते देखते छित जल पावक गगन समीर में जाने लगे हैं
अंतिम सत्य था कि जीवनमरण एक भ्रम था यही मर्म था



आत्मा इसी मूलब्रह्माण्ड में विलीन हुआ यही है यकीन हुआ
खुदा, ईश्वर, गाड, परमेश्वर प्रकृति का ही नाम है यही राम है
ये यात्रा पूर्ण हुई, शरीर का न पता चला कब जीर्ण–शीर्ण हुई
मुझे न स्वर्ग दिखा न नर्क, न ही आनाजाना हाँ मूल पहचाना



लख–चौरासी यात्रा जिसमें सबको जाना जिसने राम न जाना
आत्मा बूँद है परमात्मा सागर जब मिलन हुआ मिटे भ्रम गागर
सतगुरु शरण मुक्ति का साधन, जो न आए बनें चौरासी आधम
साकार है आकार ये रूप निराकार, देखो मिलकर रब चमत्कार



ध्यान योग टूटा जगत से नाता टूटा, वास्तविकता नजर आई
शरीर हाथ पांव कांप रहे थे, सच जानकर घबराए हांफ रहे थे
ये कुछ और नहीं सेल्फ रियलाइजेशन था, सीखा रब लेशन था
उपजे जिससे मूल को जानो, आवागमन का बंधन मक्त मानो ।



लोन के चक्रव्यूह में फँसा कर्मचारी

– श्री. राजेन्द्र लाहिरी,
पमगढ़, छत्तीसगढ़

आदरणीय श्रोताओं, एक कर्मचारी की व्यथा सुना रहा हूँ,
तालियों से हुँकार भरिएगा, मैं चक्रव्यूह का रास्ता दिखा रहा हूँ,
सैलरी आते ही चेहरे पर जो नूर आता है,
सच कहूँ दोस्तों, वो लोन की वजह से काफूर हो जाता है,
बैंकवाले ऐसे पीछे पड़ते हैं जैसे साढू भाई हों,
''लोन ले लो सर, चाहे जेब में फूटी कौड़ी न समाई हो !''
हमने भी कह दिया – लाओ, जो देना है दे दो,
गाड़ी ले लो, बंगला ले लो, मेरी स्वतंत्रता ले लो ।
क्रेडिट कार्ड को समझा कि अलादीन का चिराग है,
स्वाइप करते-करते भूल गए कि आगे बहुत बड़ा डाग (गड्ढा) है,
अब हर महीने की पहली तारीख को जो तमाशा होता है,
कर्मचारी मोबाइल थामे, कोने में बैठ के रोता है,
सैलरी का मैसेज आता है टुक-टुक,
और ईएमआई कटने का मैसेज आता है धुक-धुक,
सुबह नौ बजे अकाउंट में लक्ष्मी जी कदम रखती हैं,
और नौ बजकर दो मिनट पर, वो मायके के लिए निकलती हैं,
बीच में दो मिनट को जो सुख मिलता है,
बस उतने में ही इस कर्मचारी का दिल खिलता है,
नौकरी छोड़ने का ख्याल जब भी दिल में आता है,
सामने होम लोन, कार लोन, पर्सनल लोन
का भूत नाच जाता है,
बॉस की हर गाली अब हमें मधुर संगीत लगती है,

क्योंकि इस्तीफे का नाम लेते ही
सिबिल स्कोर की अर्थी उठती है,
अरे, बीवी ने एक दिन प्यार से कहा सुनो जी, कहीं बाहर ले चलो,
मैंने कहा ये लो बैंक स्टेटमेंट, इसी को देख के तसल्ली कर लो,
अब तो आलम ये है दोस्तों, कि परचून की दुकान पर जाते हैं,
तो आधा किलो शक्कर भी नो-कॉस्ट ईएमआई पर कटवाते हैं,
महाभारत के अभिमन्यु को तो चक्रव्यूह तोड़ना नहीं आता था,
पर वो वीर था, मर्यादा से लड़ना जानता था,
हम तो वो आधुनिक अभिमन्यु हैं,
जो पढ़े-लिखे होकर भी हारे हैं,
अपनी ही सैलरी को,
दूसरों के अकाउंट में जाते देख,ताली बजा रहे हैं,
मरने के बाद जब चित्रगुप्त मेरी फाइल खोलेंगे,
और यमराज गुस्से में आकर मुझसे कुछ बोलेंगे,
मैं तपाक से कहूँगा प्रभु,
नरक की आग मुझे लगेगी भली,
बस इतना बता दो,
इसकी ईएमआई मंथली कटेगी या क्वार्टरली ?



गज़ल

– श्री. रमेश
मनोहरा,
जावरा, म.प्र.

हो रहा हैं सच्चाई का ख़ून मियाँ
सिर चढ़कर बोलता हैं जुनून मियाँ
जंगल के शेर भी अब तो घबराए
हुए आदमी के तेज नाख़ून मियाँ
धोती तो संस्कृति की पहचान हैं
मत लजा पहनकर तू पटलून मियाँ
ज़िंदगी को इस तरह बना ले यहाँ
लगे ये मसूरी देहरादून मियाँ
गद्दारों को राष्ट्रीय धारा में ला
बजाकर के राष्ट्रीय धून मियाँ
कल से ही वे भूखे सोये इसलिए
दीजिए उनको रोटी दो जून मियाँ
जिनके पास कोय काम न हैं 'रमेश'
वही है सदी के अफलातून मियाँ



अच्छे विचार, मधुर वाणी

– एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी,
गोंदिया, महाराष्ट्र

अच्छा सोचिए, अच्छे विचारों से मन सजाइए,
मीठे बोलों से हर दिल में जगह बनाइए,
शब्दों में रखिए प्रेम, व्यवहार में सम्मान,
आपकी वाणी से महक उठे किसी का जहान ।

कभी एक मीठा शब्द, टूटे दिल को जोड़ देता है,
कभी छोटा–सा अपनापन, उदास चेहरा मोड़ देता है,
एक अच्छी बात, किसी की उम्मीद जगा सकती है,
बुझती हुई खुशियों में फिर नई रोशनी ला सकती है ।

नफ़रत के बदले प्रेम का पैग़ाम दीजिए,
रूठे हुए चेहरों को मुस्कान का नाम दीजिए,
ऐसे बोल बोलिए, जो दिलों में उतर जाएँ,
शब्द किसी के जीवन में बहार लाएँ ।

किसी की उदासी में मुस्कुराहट बन जाइए,
किसी की निराशा में नई हिम्मत जगाइए,
क्या पता आपकी बात कितना सुकून दे जाए,
किसी का बिगड़ा हुआ दिन भी सँवर जाए ।

अच्छा सोचिए, क्योंकि विचार ही पहचान हैं,
अच्छा बोलिए, क्योंकि शब्दों में अरमान हैं,
किशन एक अच्छी बात किसी का दिन बदल सकती है,
प्रेम से कही बात, किसी की दुनिया सँवार सकती है ।



मुस्कुरा रही माताराणी

(राधेश्यामी छंद)

–श्री. मोनिका डागा 'आनंद',
चेन्नै, तमिलनाडु

नौ दुर्गा का अवतार लिए, मुस्कुरा रही माताराणी,
धूम मची है नवरात्रों में, गज सवार श्री मातु भवानी ।

इन शारदीय नवरात्रों में, अंबे माँ को भक्त मनाएँ,
शुद्ध भाव से नौ स्वरूपों की, नित ही सुंदर महिमा गाएँ,
नौ दिन श्रद्धा से विधिवत् ही, नौ रूपों का ध्यान लगाएँ,
फल–फूल और नैवेद्य कई, माता को प्रेम से धराएँ,
नौ रूपों में करें श्रृंगार, चक्रों पर विराजित भवानी,
नौ दुर्गा का अवतार लिए, मुस्कुरा रही माताराणी ।

मातु शैलपुत्री दे स्थिरता, ब्रह्मचारिणी तप की दीक्षा,
चंद्रघंटा निडरता दे दो, कुष्मांडा गूढ़ प्रेम शिक्षा,
मन विशुद्ध स्कंदमाता करो, कात्यायनी सुगम्य परीक्षा,
कालरात्रि चेतना जगा दो, महागौरी करूणा प्रशिक्षा,
दीजिए सिद्धिदात्री अंतस, ज्ञानार्जन सिद्धि की निशानी,
नौ दुर्गा का अवतार लिए, मुस्कुरा रही माताराणी ।

करती है माता भक्तों की, दुष्कर संकट से रखवाली,
है तीनों लोकों में मेरी, माँ की महिमा बड़ी निराली,
हरती अंधेरा तन–मन का, पल में सारा ज्योतावाली,
सबके जीवन में लाती है, सुख ''आनंद'' अमिय खुशहाली,
बंद सौभाग्य के सभी द्वार, खोले आदिशक्ति महारानी,
नौ दुर्गा काअवतार लिए, मुस्कुरा रही माताराणी ।



दीपावली के दोहे

– श्री. श्लेष चन्द्राकर,
महासमुन्द, छत्तीसगढ़

प्रेम दीप घर–घर जले, सुखी रहें सब लोग ।
माँ लक्ष्मी वरदान दो, दूर हटे दुर्योग ।।

अंतर्मन उजियार कर, पर्व मनाओ आज ।
गाँव नगर में हर कहीं, हो दीपों का राज ।।

रखता खास महत्व है, दीपों का त्यौहार ।
तिमिर हरण करता सखे, फैलाता उजियार ।।

दीपक प्रहरी बन करे, तम से रक्षा मित्र ।
तू भी सबके काम आ, निर्मल बना चरित्र ।।

दीप पर्व की धूम है, पुलकित सारा देश ।
मीत दिखाई दे रहा, अति सुन्दर परिवेश ।।

दीपमालिका है सजी, गाँव–गली हर द्वार ।
चहुँ दिशि अब होने लगा, खुशियों का विस्तार ।।

पावन रीति रिवाज पर, होता हमको गर्व ।
जग में बहुत विशिष्ट है, दीपदान का पर्व ।।

चलो उजाले की तरफ, मिटते सारे क्लेश ।
जलकर दीपक दे रहा, जन–जन को संदेश ।।

दीपक तो करता सखे, कार्य बहुत ही खास ।
मावस में देता हमें, पूनम का आभास ।।

आओ ! कर लें दूर हम, निज मन का अँधियार ।
ज्ञात रहे होता यही, दीपोत्सव का सार ।।

बहे नित प्रेम की गंगा
(विधाता छंद)

– डॉ. अर्जुन गुप्ता 'गुंजन',
प्रयागराज, उ.प्र.



बहे नित प्रेम की गंगा सभी दिल में सुकृत्यों से ।
नचे मन मोर के जैसा मनोहर भाव नृत्यों से ।।
रचें रचना सदा संस्कृत सुवासित स्नेह संचारित ।
सभी दिल में सदा शुभता सवेरा दिव्य टंकारित ।।

सदा सच का रहे अवलंब जीवन में कृपा करना ।
सभी दुख दर्द मिट जाए प्रभो कंटक सभी हरना ।।
दया उपकार सेवा भावना का नित्य दर्शन हो ।
मिटे दुर्भावना मन की सदा कुविचार मर्दन हो ।।

सदा सत्पथ चलें अब भावना भी पुण्य पोषित हों ।
सभी उत्कर्ष ऊर्जस्वित सुहावन भव्य भूषित हों ।।
सभी खुशहाल हो मानव न कोई जीव शोषित हों ।
सदा सुविचार उद्घोषित न कोई कर्म कलुषित हों ।।

सदा सन्मार्ग पर चलकर करें उपकार जीवन में ।
सदा सद्भाव संपोषित न हो दुख दर्द सीवन में ।।
प्रभो वरदान दो हमको सभी सुख संपदा भर दो ।
कृपा बरसे सदा मधुरिम हमारे भाव को कर दो ।।

माया
कुण्डलियाँ

– श्री. वंदना ब्रह्मभट्ट 'नेह',
वडोदरा, गुजरात



माया है ठगनी बड़ी, सब में कर अनुराग ।
सुख से जीने दे नहीं, नहि मिल चैन सुराग ।।
नहि मिल चैन सुराग, मिले ना शांति कि धारा ।
उर में रख बैराग; मिले जो मुक्ति किनारा ।।
'नेह' कहे नर जान, जगत प्रभुमय जब लागे ।
जनम कृतारथ मान, तुरत माया तो भागे ।।



प्रकृति का हाइकु

– डॉ. अशोक,
पटना, बिहार

हरी–भरी धरा पत्तों पर मोती जागी है भोर
नीला आकाश बादलों की नावें उड़ता है मन
नदिया गाती पत्थरों के संग जीवन बहता
फूलों की हँसी तितली के पंखों पर रंगों का गीत
वन की छाया पंछियों की बोली मधुर संगीत
पर्वत मौन बर्फ की चादर शांति अपार
सूरज की किरण धरती के माथे पर स्वर्णिम तिलक
चाँदनी रात झील के दर्पण में तारों का नृत्य
बारिश की बूँद सूखी मिट्टी के मन सौंधी मुस्कान
हवा का स्पर्श झूम उठे तरु प्रकृति का प्रेम
धरती माँ है हरियाली उसकी जीवन की साँस
सूखते वन मौन खड़े वृक्ष किससे कहें
धुआँ ही धुआँ ढूँढ़ रही चिड़िया नीला गगन
एक बीज छोटा मुट्ठी भर मिट्टी कल का वन
जल को बचाओ नदियों की धड़कन जीवन बचाओ
प्रकृति पुकारे मत छीनो मुझसे जीने का हक

Revised Book fee for VANI VIKAS Exams
from January-2027 Exams

Vani Vikas Grade-1 ... ₹ 300	Vani Vikas Grade-5 ... ₹ 340
Vani Vikas Grade-2 ... ₹ 310	Vani Vikas Grade-6 ... ₹ 350
Vani Vikas Grade-3 ... ₹ 320	Vani Vikas Grade-7 ... ₹ 360
Vani Vikas Grade-4 ... ₹ 330	Vani Vikas Grade-8 ... ₹ 370



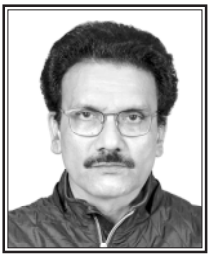
मिलती नहीं हर दर्द की दवा दवाखाने में

– श्री. आर.के. रस्तोगी,
गुरग्राम, हरियाणा

मिलती नहीं हर दर्द की दवा दवाखाने में ।
कुछ दर्द तो चले जाते है केवल मुस्कराने में ।।
मिलेगा नहीं कुछ भी किसी को बहकाने में ।
मिल जायेगा सब कुछ किसी को बहलाने में ।।
मिलेगा नहीं कुछ भी तुमको किसी को रुलाने में ।
मिलेगा जो आनंद तुमको किसी को हँसाने में ।।
मिलेगे सुख तुमको किसी को अपना बनाने में ।
अपनो को छोड़कर मिल जाती है जो बेगानो में ।।
मिलेगा कुछ भी नहीं तुमको किसी को सताने में ।
केवल बददुआ मिलेगी तुमको उसको सताने में ।।
मिलता है सुख किसी को किसी को शराब पिलाने में ।
किसी को सुख मिलता है किसी की शराब छुड़ाने में ।।

हिन्दी का मान

– श्री. अनिल कुमार सचान,
बरेली, उत्तर प्रदेश



हिन्दी की खुशबू से महके, अपना हिन्दुस्तान,
इसकी वाणी में बसता है, संस्कृति का सम्मान ।
शब्द-शब्द में प्रेम झलके, भावों में विश्वास,
हिन्दी जोड़ रही है सबको, बनकर मधुर मिठास ।
कलम चले तो दीप जले, मिटे हृदय का अँधियारा,
साहित्य बने वह सेतु, जो सबको लगे हमारा ।
आपकी पत्रिका यूँ ही ज्ञान के दीप जलाती रहे,
हिन्दी की पावन धारा जन-जन तक पहुँचाती रहे ।

माता की विदाई

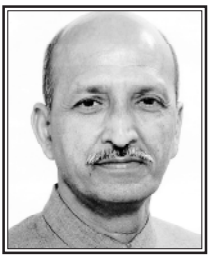
– श्री. विमल कुमार,
पूर्णियाँ, बिहार



भारी भीड़ भक्तों की, माता के दरबार ।
तन–मन में शक्ति भर दे, अब सुन लें मनुहार ।। 1 ।।
नौ दिन के नव रूप से, सबका कर कल्याण।
दुष्टों की संहारिणी, देती सबको त्राण ।। 2 ।।
साल भर राह ताकता, धिया रहे दिन गीन ।
आँखों में आँसू दिया, छोड़ गई गम लीन ।। 3 ।।
दे जाना सबको यहाँ, सरस प्रेम संदेश ।
सुख–संपदा बढ़े सदा, जो जग ले उपदेश ।। 4 ।।
सूनी नगरी गाँव है, सूना सब घर–बार ।
सबके मन में पीड़ है, रोता है दरबार ।। 5 ।।
आना फिर जल्दी शिवा, जगमग हो संसार ।
खुशियाँ हर दिल में बसे, रहना बन दातार ।। 6 ।।

दीप जला लो

– डॉ. अनन्त कीर्ति वर्द्धन,
मुजफ्फरनगर, उ.प्र.



एक दीप प्यार का, दिल मे जला कर,
नफरतों का अन्धेरा, कुछ तो मिटा लो ।
एक दीप ज्ञान का, जग मे जला कर,
अज्ञान का तम बहुत, कुछ तो मिटा लो ।
एक दीप स्नेह का, निज घर में जला कर,
टूटते रिश्तों की दुनिया, कुछ तो बचा लो ।
एक दीप संस्कार का, बच्चो मे जला कर,
संस्कार संस्कृति, सभ्यता, कुछ तो बचा लो ।
एक दीप एहसास का, खुद के लिये जलाकर,
राष्ट्र हित कर्तव्य अपना, कुछ तो सँभालो ।

गज़ल

– डॉ. कामिनी व्यास रावल,
उदयपुर, राजस्थान



तेरा ख़याल दिल से निकाला नहीं गया
अपने ही दिल को हम से संभाला नहीं गया

साज़िश तमाम उम्र अंधेरों ने की मगर
उम्मीद का दिलों से उजाला नहीं गया

सच ही रहा लबों पे हमेशा ही इसलिए
किरदार में जो झूठ को ढ़ाला नहीं गया

अपना ज़मीर डोल न पाया है इसलिए
दिल में फ़रेब को कभी पाला नहीं गया

इंसान चाहे कितने जतन कर के देख ले
क़िस्मत का लिखा लेख तो टाला नहीं गया

तारीफ़ तेरी करते हुए हम थके नहीं
लेकिन तेरे दिमाग़ से जाला नहीं गया

हर शख़्स कामिनी से ये कहता है आज तक
अंदाज़ शायरी का निराला नहीं गया



हम कुछ ना कहेंगे

– डॉ. अलका अग्रवाल,
जयपुर, राजस्थान

तुम भी ना समझोगे व्यथा,
जो मेरे दिल में है ।
किससे कहें अपनी कथा,
कोई भी है नहीं ।

कुछ लाभ भी दिखता नहीं,
कहने से किसी को ।
उपहास ही करते हैं यहाँ,
दूसरों का सब ।

बाती जले कितनी भी,
शिकायत नहीं करती ।
जलती हुई शमा भी,
कभी उफ नहीं करती ।

जो कुछ भी है दिल में,
उसे चुपचाप सहेंगे ।
आँखों में हो आँसू मगर,
हम कुछ ना कहेंगे ।

SHABARI SIKSHA SANSTHAN
Shabari Palace, 193, Second Agraharam, Salem - 636 001.
✆ 88703-55599 ✆ 88704-55599
Visit us @ https://shabari.in

A glance about Vani Vikas

Answers for the Frequently Asked Questions.....

Application forms for Vani Vikas Exams will be issued only to the members of Shabari Siksha Sansthan. Annual membership fee Rs.100/-

Why Vani Vikas exams are conducted ?

The name **Vani Vikas** itself explains us clearly that, Vani Vikas is to motivate the non Hindi speakers to speak in Hindi.

Who conduct the Vani Vikas exams ?

The Vani Vikas exams are conducted by **SHABARI SIKSHA SANSTHAN**.

Is Vani Vikas, written exam or oral exam (Vivavoce) ?

Vani Vikas exams motivate the students to speak Hindi, this is not a written exam.

What is the minimum age limit for Vani Vikas exam ?

One who has completed 8 years shall appear for the exam. Those who are participating in the Vani Vikas first level must attach the Xerox copy of the birth certificate.

What is the basic educational qualification for Vani Vikas exam ?

There is no basic educational qualification for Vani Vikas exam, self-interest is enough.

During which months that Vani Vikas exams are conducted ?

Vani Vikas exams are conducted in January, April, July and October.

How many levels are there in Vani Vikas exam ?

The Vani Vikas exam consists of EIGHT levels.

Is there any separate text book for Vani Vikas exam ?

Yes, Vani Vikas exam consist of seperate text books for all the EIGHT levels.

Is it must to take part in Vani Vikas exam level by level ?

Yes, you are suppose to do this exam level by level only. You can't do more than one level at the same time, in the same way you can't able to apply directly to second level or any other level. Those who apply for second level to eighth level must enter the 10 digit register number (passed previous exam number) in the exam application form.

Can we know about the exam centres for Vani Vikas ?

If you have 30 students to appear for the exam you will have your own centre. If the students number (count) is between 10 to 29 you have to pay rupees 500 as exam centre charge. **In your centre few more students from outside may join with you without any prior information from us**. The PAID exam centre charge will never be returned.

A minimum 10 students must be there for a Batch or Term to apply for Vani Vikas Exam (January or April or July or October).

Does the Vani Vikas exam have the mark list and certificate ?

Within 30 days after the exam you will receive the mark list and within 60 days after the exam you will receive the Certificate. Results will be published in https://shabari.in.

Who will conduct the Vani Vikas exam ?

Experienced and efficient teachers will conduct the Vani Vikas exam.

Is there any sample questionnaire for Vani Vikas exam ?

Model question papers are at the end of the Vani Vikas text book.

Is Vani Vikas worth for students ?

By improving Hindi it is going to be definitely useful for the students and for their future carrier.

Where are the common examination centres available for the Vani Vikas examinations?

Our common examination centres for the Vani Vikas examination are currently operational at the following locations:

❖ **Salem** ❖ **Hosur** ❖ **Tirupur** ❖ **Kumbakonam** ❖ **Kanchipuram** ❖ **Erode**

For the convenience and welfare of our students, we are progressively expanding our centre network across all districts of Tamil Nadu. Additional centres will be announced in due course.

Details of the books :

Name of the Exam	Book	Name of the Exam	Book
Vani Vikas Grade - 1	₹ 300.00	Vani Vikas Grade - 5	₹ 340.00
Vani Vikas Grade - 2	₹ 310.00	Vani Vikas Grade - 6	₹ 350.00
Vani Vikas Grade - 3	₹ 320.00	Vani Vikas Grade - 7	₹ 360.00
Vani Vikas Grade - 4	₹ 330.00	Vani Vikas Grade - 8	₹ 370.00

Kindly pay the Vani Vikas books charges only through our web portal @ **https://shabari.in**



महान संत शिव भक्त – तमिल नायनमार

सत्ती नायनार

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार, कोवै, तमिलनाडु

माता को तुम कभी बदल सकते हो ? बताओ न बात अभी सही
काले हो या लंबे, नाटे हो या गोरे बताओ पिता को क्या तुम बदल सकते हो ?
जाति का तो पता नहीं किसने शुरू किया कोई आधार यहाँ है ही नहीं
धर्म सनातन का शुरू से है सनातनी जगत के आरंभ से अब तक है
धर्म को बदलना अपने पूर्वज की बात को बिलकुल टाल देना
अपनी परंपरा जो है उसके विरुद्ध कभी कुछ ना कुछ कर पाना
किसी के कहने किसी के कुछ देने किसी के धमकाने से कैसे बदल सकता है आदमी
अपने धर्म को भूलकर अपने स्वामी को छोड़कर दूर कैसे जा सकता है ?

अपने धर्म का सम्मान ना कर अपने ही भगवान पर परिहास कर
गन्दे विचारों से ग्रन्थों को नीचा दिखाने के नीचतम प्रयास बेशर्म हो कर
देव देवियो के रूप पर अपवाद फैलाकर विद्रोह फैलाना
युगों से चलनेवाले हिन्दू धर्म के विश्वासों पर लात मारना
अन्य कई धर्म के आचरण पर नजर अंदाज करके सनातन पर संवारना
अपनि स्वार्थता की प्रधानता के लिए सरल हिन्दुओं का दिल दुखाना
बिन हड्डी के जीभ से मन में कुछ भी आवे उसे बक देना
आज भी है अनेकानेक यहाँ नाम कमाने या दम कमाने करते कुकर्म यहाँ ।

अपनी माँ बहन की गली जो सुन लेता है सह लेता है क्या जीव है
अपने धर्म पर कोई कुछ भी बोल मुझे क्या है ? क्या घटनेवाला है ?
सर्वधर्म को एक माँ ने का डोंग रचाकर घूमनेवाले कुछ नहीं कहते हैं
अन्य धर्म के बारे में कुछ कहने से भी यह लोग बहुत डरते हैं
सनातनी धर्म पर बुरा विचार गलत विचार प्रकट करनेवाले यहाँ है
उनके पक्ष लेनेवाले कुछ अल्पंजीवी बुद्धिहीन भी बहुत यहाँ है
खुद के बारे में कुछ भी कह लो चलेगा बक रहे हो तो बक लो चलेगा
मेरा धर्म मेरे महेश्वर पर कुछ खाओगे तो नहीं चलेगा सजा मिलेगा ।

चोल राज्य के वेलालर कुल के एक असाधारण व्यक्ति थे सत्ती नायनार
वरिंजय प्रदेश के थे वांछनीय गुणों के थे सत्ती नायनार महान
शिव का नाम ये भजते रहते शिव शिव शिव शिव कहते रहते
शिव मंदिर में नित्य सेवा नियमित रूप से ये करते रहते
शिव भक्त की रक्षा में सबसे आगे सस्नेह लगते उनकी सेवा करते
पूजा के फूल इकट्ठा करते मंदिर के परिसर को भी साफ करते
सच्चे मन से सेवा करते शिव की सेवा में सुख भरपूर ये अपनाते
भक्तों की सेवा में अपने प्रभु को देखते हर रूप से परमेश्वर के ठहरते ।

गुस्सा जब भी आ जाता है अपने आप को कभी रोक नहीं पाते
सामने कौन है ? उसकी योग्यता क्या है ? कहने का तात्पर्य भी क्या है ?
कुछ सोच नहीं पाते, कभी रोक नहीं पाते, किसी से पूछ भी न लेते
करना क्या है ? कब करना है ? कैसे करना है ? कुछ अता-पता नहीं रहता
शिव के बारे में कोई अनकही बात कह देता तो इनके दंड से बच नहीं पाता
बातों से उसे कभी नहीं समझते शब्दों से डांट डबक नहीं लेते
सीधे अपने हाथ में सत्ती नाम का एक चाकू लेते उस पर चलाते
जी जब से अशब्द बोला अनचाही बात कही गई काट देते ।

शिव के गुणगान जो भी करते रहते उनसे ये तो बहुत अच्छे रहते
शिव के विरुद्ध जो भी कुछ बोल देते सिर नहीं जब जरूर काट देते
अपने नाथ परमेश्वर के बारे में कुछ गलत कभी सुन नहीं पाते
अपना धर्म जो है उसे पर कभी आंचल आने भी नहीं देते
शिव के शिव भक्तों के दुश्मनों पर सिंह यह टूट पड़ते उनको भागते
पंचाक्षरी का पाठ करते शिव नाम का जाप करते सेवा भी करते
बहिष्कारियों को नास्तिकों को कुछ गलत बोलनेवालों को सबक सिखाते
अंत तक करते रहे शिव की पूजा अंत में मिल गए शिवचरण में मुनि सा ।

सशक्त ठहरे निराला, हाँ सत्ती नायनार ।
सभक्ति सेवा कर सतत, बने रहे दमदार ।।



शरद पूर्णिमा - अंतर्मन का चाँद

– डॉ. सुबोध कुमार शर्मा,
बड़ोदरा, गुजरात

पूर्णिमा केवल गगन में नहीं,
मन के आँगन भी आती है ।
जब चित्त शांत, विचार मौन हों,
अंतर–ज्योति मुस्काती है ।।

चाँद नहीं बस नभ का दीपक,
मन का भी प्रतिबिंब है ।
जब मन अपनी पूर्णता छू ले,
जीवन स्वयं एक छंद है ।।

शरद निशा की शीतल बेला,
अमृत–सी बरसाती है ।
निर्मल नभ की चंद्र–किरणें,
अंतस को सहलाती हैं ।।

न कोई इच्छा, न अभिलाषा,
न याचना, न कोई भार ।
मौन साधना में डूबा मन,
पाता चेतन का विस्तार ।।

खुले गगन के नीचे बैठो,
चाँद निहारो प्रेम से ।
कुछ न माँगो, कुछ न सोचो,
जुड़ जाओ बस नेह से ।।

चाँदनी की शीतलता केवल,
बाहर से कब आती है ?
जब मन निर्विकार हो जाए,
भीतर सुधा बरसाती है ।।

पूर्ण चंद्र का यही संदेश,
अधूरेपन को दूर करो ।
मन के कोलाहल को त्यागो,
आत्म–ज्योति से नाता जोड़ो ।।

पूर्ण नहीं वह, जो सब पा ले,
पूर्ण वही, जो शांत रहे ।
सुख–दुःख की लहरों के ऊपर,
जो समभाव में नित्य बहे ।।

चाँदनी की शीतलता केवल,
बाहर से कब आती है ?
जब मन निर्विकार हो जाए,
भीतर सुधा बरसाती है ।।

नभ का चंदा राह दिखाए,
मन का चंदा ज्ञान बने ।
मौन बने जब साधना अपनी,
जीवन स्वयं निर्वाण बने ।।

चाँद खिले तो मन भी खिले,
मौन खिले तो ज्ञान ।
शरद पूर्णिमा में पा लें हम,
अपने भीतर का चाँद ।।



दो कविताएँ

– श्री. केशव शरण,
वाराणसी, उ.प्र.

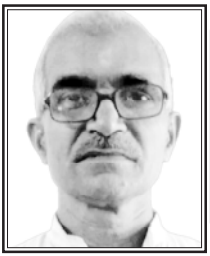
सवेरे–सवेरे

सवेरे–सवेरे की धूप
सवेरे–सवेरे की हवा
सवेरे–सवेरे का आसमान
सवेरे–सवेरे की नदी
सवेरे–सवेरे के घाट
सवेरे–सवेरे के पेड़
सवेरे–सवेरे की घास
सवेरे–सवेरे के फूल
सवेरे–सवेरे के पंछी
कुछ और होते हैं
सुन्दर, प्रेमिल, मस्त
मस्त हमें करते
जो अन्य समय
निर्लिप्त रहते
और हम भी कहीं व्यस्त
ख़ुद में !

तब भी तू

सवेरे जागने वालों का भी दिन
दिन चढ़े
बदल जाता है
प्रकृति के साथ
जब गान, क्रीड़ा, मस्ती
करने के बाद
चरिंदे, परिंदे भी
लग जाते हैं
पेट भरने
घर बनाने
और संतति सँभालने के
अपने काम में
पवन, सूर्य और मौसम की
बात ही अलग है
मगर आदमी की भागदौड़
बहुत अधिक है
उसके पास
पूरे दिन का समय भी
कम पड़ता है
तब भी तू
दिन चढ़े तक
सोया रहता है !

साहित्यकारों से निवेदन है कि वे स्वरचित, अप्रकाशित रचनाएँ मात्र भेजें ।
अन्य पत्रिकाओं व सोशियल मीडिया या अन्य जगहों पर प्रकाशित रचनाएँ कभी नहीं भेजें ।



तुम हृदय की रागिनी हो

– डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय,
प्रयागराज, उ.प्र.

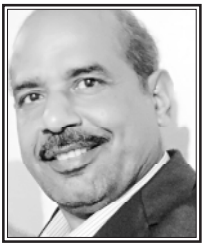
तुम हृदय की रागिनी हो
मैं पीहा विकल प्यासा
तुम धवल मधु यामिनी हो
मैं प्रगति प्रतिरूप आशा
मन्दाकिनी की धार हो तुम
मैं भगीरथ यत्न कर्ता
प्रकृति की आधार हो तुम
मैं तुम्हारा विघ्न हर्ता
तुम सुकोमल भावना हो
मैं पखेरू मन तरंगित
तुम दयामयि मूर्ति ममता
साकार करुणा स्नेह अंकित
छाँव ममता की घनेरी
तुम सुफल आराधना हो
मैं पुजारी प्रेम मंदिर
तुम हमारी साधना हो
कल्पना की डोर मंजुल
तुम मृदुल उल्लास धीरा
सत्यपथ अनुगामिनी हो
तुम सतत सलिला सुनीरा
देहरी का दीप हूँ मैं
तुम प्रकाशित वर्तिका हो
मैं हवन का धूम्र अर्पित
तुम सुवासित अर्चिता हो
शक्ति संयम और संबल
प्रतिमान उन्नति की बनो
ध्येय पथ पर ले चलो
संधान प्रत्यंचा सी तनो
लघु निवेदन कर रहा हूं
स्वीकार कर लो आज तुम
अनुदान दे दो स्नेह का
अंगीकार कर लो आज तुम



हार नहीं मानूँगा

– श्री. मोहित.जे.
संतोष, कोवै,
तमिलनाडु

बंध रहा हूँ मैं चारों ओर,
हार और दुःख की दीवारों में ।
फँस रहा हूँ मैं,
ज़िम्मेदारियों और सपनों के बीच में ।
आज समाज की आलोचनाएँ,
पत्थरों–सी गिरती हैं मेरी ओर ।
उनको पता नहीं कि उन्हीं पत्थरों से
ख़ूब बनेगा मेरा महल ।
नई–नई चुनौतियाँ रोज़,
नया–नया हौसला रोज़ ।
कुछ भी हो, मैं तैयार हूँ,
कुछ भी हो, मैं तैयार हूँ ।
यह समय किसी के लिए
रुकता नहीं, पर सबको बदलता है ।
तो करता रहूँगा कोशिश हरदम मैं,
कभी भी हार नहीं मानूँगा मैं ।



आँखों में बसना भोले

– श्री. कार्तिकेय कुमार त्रिपाठी 'राम',
इन्दौर, म.प्र.

श्वांसें जब कुछ शेष बची हों,
भोले फिर तुम आ जाना,
बतिया लेंगे कुछ पल हम-तुम,
और थोड़ा-सा मुस्काना ।
श्वांसें जब कुछ...
नहीं रहे मन में कुछ इच्छा,
ऐसा कुछ तुम समझाना,
नहीं रहे संशय कुछ मन में,
मोह की दुनिया बिसराना ।
श्वांसें जब कुछ...
अगल-बगल जो रिश्ते होंगे,
पलक कहीं नम मत करना,
ध्यान धरूँ जो भोले तेरा,
बस आँखों में तू बसना ।
श्वांसें जब कुछ...
ये जीवन जो दिया है तूने,
ये सब कुछ तेरा ही है,
रैन-बसेरा था कुछ पल का,
बचा नहीं कुछ मेरा है ।
श्वांसें जब कुछ...
कर्म की गठरी छोड़ रहा हूं,
पाप-पुण्य का भान नहीं,
चला चलूँगा तेरे पीछे,
भोले कुछ और ध्यान नहीं ।
श्वांसें जब कुछ...



मेरा पुराना स्कूटर

– श्री. संजय एम. तराणेकर,
इन्दौर, म.प्र.

वो पुराना-सा स्कूटर,
आज भी आँगन में खड़ा है,
जैसे बीते हुए कल का
कोई किस्सा बनकर खड़ा है ।

कितनी राहों का साथी था,
कितनी धूपें साथ सहीं,
कभी बाजार, कभी दफ्तर,
कभी परिवार की खुशियाँ गहीं ।

तनख्वाह से पैसे बचाकर
जिस दिन घर में आया था,
उस दिन जैसे छोटे-से घर ने
अपना सपना पाया था ।

न कर्ज़ की लंबी किस्तें थीं,
न दिखावे का कोई शोर,
कम साधन थे जीवन में,
पर खुशियाँ थीं कुछ और ।

कभी किक में रूठ जाता,
कभी रास्ते में रुक जाता,
फिर भी घर का अपना सदस्य
बनकर हर मुश्किल निभाता ।



दीवाली

– श्री. भूपसिंह
'भारती',
नारनौल, हरियाणा

दीपों का त्योहार दीवाली ।
लाए खुशी अपार दीवाली ।।
हर घर आंगन में दीप जले,
करदे जगमग संसार दीवाली ।
इक दूजे को गले लगाओ,
प्यार का इजहार दीवाली ।
खरीददारी जम कर होती है,
सजा देती बाजार दीवाली ।
पकवानों और मिष्ठानों की,
करे खूब भरमार दीवाली ।
घर की रखना साफ सफाई,
सिखलाती हर बार दीवाली ।
बुरी आदतों को जब छोड़ो,
तब होगी गुलजार दीवाली ।
मिटा अंधेरा लाकर उजाला,
करे रोशन घर द्वार दीवाली ।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई,
सब में बांटे प्यार दीवाली ।
उत्साह, उमंग, हर्ष, प्यार का,
पर्व है सदाबहार दीवाली ।
हम इको आतिशबाजी से,
बनाएँ हम मजेदार दीवाली ।
आओ प्रदूषण मुक्त मनाए,
मिलकर के त्योहार दीवाली ।



आज दीवाली है

– श्री. अशोक आनन,
शाजापुर, म.प्र.

दीये जलाओ ! ख़ुशी मनाओ !
आज दीवाली है ।
मन का तम हटाकर हम –
उर उजालों से भर दें ।
मन की अमावस को हम –
रोशन प्यार से कर दें ।
नाचो–गाओ ! ख़ुशी मनाओ !
आज दीवाली है ।
लिपे–पुते मन–आँगन को –
रंगोली से हम भर दें ।
भेदभाव की सभी दीवारें –
धराशायी हम कर दें ।
द्वार सजाओ ! ख़ुशी मनाओ !
आज दीवाली है ।
द्वारे बंदनवार सजी हों –
देहरी सजे दीये हों ।
घर के कोने–कोने में –
उजालों के ठीये हों
शोक मिटाओ ! ख़ुशी मनाओ !
आज दीवाली है ।
रोशनी के तालों में हर –
गाँव–शहर डूबा हो ।
लाख कोशिश कर लें तम –
पूरा नहीं मंसूबा हो ।
खाओ, पीओ ! ख़ुशी मनाओ !
आज दीवाली है ।



आई लव यू किसे कहूँ

– श्री. सतीश 'बब्बा', चित्रकूट, उ.प्र.

न बेटी है न बेटी सरीखी बहू है,
पत्नी भी छोड़ गई बीच में है,
माँ की ममता को क्या कहूँ,
आई लव यू किसे कहूँ !

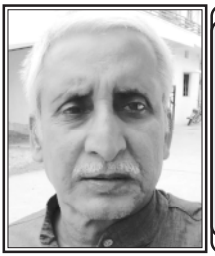
जितने भी रिश्ते थे अपने,
सब सपने बनकर फुर्र हो गए,
जब जागा तब की मैं क्या कहूँ,
आई लव यू किसे कहूँ !

यह जीवन का सफर है तन्हाई,
किसी की कोई युक्ति न काम आई,
कब जागा कब सोया मैं क्या कहूँ,
आई लव यू किसे कहूँ !

अब प्रेम की बयार नहीं बहती,
अब प्रेम की नदिया नहीं बहती,
दुख के लहराते सागर को क्या कहूँ,
आई लव यू किसे कहूँ !

सारे रिश्ते नाते झूठे हैं,
अपने ही सिक्के खोटे हैं,
मृत्यु सत्य को क्या कहूँ,
आई लव यू किसे कहूँ !

मृत्यु चिन्तन करता हूँ,
कब आएगी नहीं जानता हूँ,
अंधियारा है नहीं देख सकूँ,
आई लव यू किसे कहूँ !!



सारे जग की क्षुधा मिटाता...

– श्री. शशि तिवारी,
गोंदिया, महाराष्ट्र

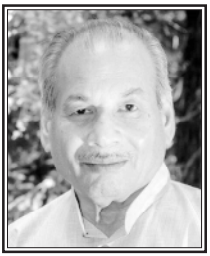
इन्सान न समझो इसे यही तो
धरती का भगवान है।
सारे जग की क्षुधा मिटाता
कहते जिसे किसान हैं।

भोर अंधेरे घर से निकले
सांझ ढले तो लौटे घर।
भीगे जो भीषण बरसा में
कड़ी धूप बीते सर पर।

जिसके बिन सूने लगते
खेत और खलिहान हैं।
सारे जग की क्षुधा मिटाता
कहते जिसे किसान हैं।

इस धरती पर दो ही जन्में
माँ के प्यारे लाल हैं ।
एक जवान, दूजा किसान
दोनों के कर्म महान हैं ।

सम्मानित हम इन्हें करें
यही धर्म और ध्यान है ।
सारे जग की क्षुधा मिटाता
कहते जिसे किसान हैं ।



दृष्टि और दृष्टिकोण

– विद्यावाचस्पति डॉ. कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य',
लखनऊ, उ.प्र.

इंसान इंसान से अलग दिखे
इसके पीछे क्या कारण है,
दो आँखें इसकी भी हैं और
उसकी भी आँखें दो ही तो हैं ।
दृष्टि भी दूर तलक इसकी
जाती है और उसकी भी,
दृष्टिकोण पर उन दोनो के
शायद अलग अलग होते हैं ।
दृष्टिकोण अलग हो जाता है
जब लोग निजी परिस्थितिवश,
बहुधा अपनी वास्तविक सोच
समझ भी बदलते रहते हैं ।
सोच, समझ यदि दर्पण जैसी हों
तो स्थिति कभी न बदलती है,
दर्पण की प्रकृति टुकड़े टुकड़े
होने पर भी नहीं बदलती है ।
दर्पण जैसा इंसान रहे जो टूटे
पर भी प्रतिबिम्ब दिखाता है,
आदित्य हमारे जीवन में वस्तु
स्थिति का भी यही तक़ाज़ा है ।

अब मैं मुस्कुरा लेती हूँ !

– डॉ. कमला तमांग,
मिरिक, दार्जीलिङ, प.बं.

अब मैं मुस्कुरा लेती हूँ !
कर लेती हूँ
नज़रअंदाज़
अपनी ही गलतियों को ।
नहीं रखती किसी से
बहुत अधिक अपेक्षाएँ,
संतुष्ट हूँ
जो मिला है
अपनी प्राप्ति में ।



अब उलझनें
मुझे परेशान नहीं करतीं,
दिक्कतें भी
महसूस नहीं होतीं ।
क्योंकि मैंने सीख लिया है
अपनी तकलीफ़ों को
अपने भीतर ही
चुपचाप समेट लेना ।
हाँ !
अब मैं अक्सर
अपनी ही उदासी से
एक मुस्कान चुरा लेती हूँ ।
अब मैं मुस्कुरा लेती हूँ –
हर उस बात पर
जिसे कभी
दिल से लगाया करती थी ।
अब मैं मुस्कुरा लेती हूँ !
हाँ...
अब मैं मुस्कुरा लेती हूँ !



सरस्वती आवाहन

– पं. जुगल किशोर त्रिपाठी,
झाँसी, उ.प्र.

हे मातु जग की सरस्वती,
तू काम इतना कर मेरा ।
मानव विकारों से ग्रसित,
कर मुक्त, हो एहसान तेरा ।।

जीवन–जनम का खेल है,
मिलकर रहें सब प्रेम से ।
स्नेह, करुणा और मैत्री,
बहे सरिता, नेम से ।।

कण्ठ में मेरे विराजीं,
ओज अपना है बिखेरा ।
सभी में समभाव हो,
न द्वन्द, ईर्ष्या का हो डेरा ।।

विश्व हित है चाह मेरी,
नहीं अपनी चाह हो ।
साधना मेरी सफल हो,
हृदय मम निष्पाप हो ।।

सब सुखी, नीरोग हों अरु,
सब करें सहयोग सबका ।
त्योहार सब मिलकर मनाएँ,
हो जाति इक व धर्म सबका ।।

खुदा देखता नहीं

– श्री. निलेश जोशी 'विनायका',
पाली, राजस्थान



आदमी है
डरता है आदमी से
खुद से
परिवार से
समाज से
उसे लगता है
क्या कहेगा
आदमी
क्योंकि
आदमी देखता है
रोकता है
टोकता है
इसलिए डरता है
आदमी से
छुपाता है खुद को
खुद से
नहीं डरता
खुदा से
क्योंकि खुदा
रोकता नहीं
टोकता नहीं
उसे लगता है
खुदा देखता नहीं ।



प्रिय श्रीधर सेलम जी, शबरी शिक्षा समाचार अक्टूबर 26 अंक पाकर प्रसन्नता हुई। इस अंक में मेरी कविता 'प्रभु की लीला अपरम्पार' भी प्रकाशित हुई। इसके लिये आपका हृदय से आभार एवं धन्यवाद।

सुदूर दक्षिण भारत से शबरी शिक्षा समाचार पत्रिका के माध्यम से हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार बहुत ही सराहनीय एवं सार्थक प्रयास आपके द्वारा किया जा रहा है। निश्चित ही आपका यह प्रयास हिन्दी को समृद्ध करेगा और राजभाषा बनाने में विशिष्ट भूमिका निभाएगा।

– विद्यावाचस्पति डॉ. कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य', लखनऊ, उ.प्र.

'शबरी' (अक्टूबर 2026 अंक)

समीक्षक: एक समग्र एवं निष्पक्ष साहित्यिक मूल्यांकन

भारतीय वांग्मय और सांस्कृतिक चेतना में 'शबरी' का नाम केवल एक पौराणिक आख्यान मात्र नहीं, बल्कि वह अनन्य प्रतीक्षा, निष्काम साधना और आंतरिक समर्पण की ऐसी पराकाष्ठा है जो युगों-युगों तक मानवता को दिशा दिखाती रही है। जिस प्रकार दंडकारण्य के बीहड़ एकांत में शबरी ने वर्षों तक नित्य काँटों को बुहारते हुए और मीठे बेरों को सहेजते हुए मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की प्रतीक्षा की थी, ठीक उसी वैचारिक और आत्मिक धरातल पर साहित्य जगत में पत्रिका 'शबरी' का यह अक्टूबर 2026 अंक अपने नाम को पूर्ण सार्थकता प्रदान करता है। आज के इस आपाधापी भरे युग में, जहाँ व्यावसायिकता और अल्पकालिक प्रसिद्धि की होड़ ने गंभीर साहित्यिक पत्रकारिता के मूल स्वरूप को संकुचित कर दिया है, 'शबरी' का यह नवीन अंक अपने गंभीर चिंतन, सुरुचिपूर्ण कलेवर और उदात्त मानवीय सरोकारों के बल पर एक विशिष्ट और अनिवार्य उपस्थिति दर्ज कराता है। यह अंक मात्र पन्नों और रचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि एक युगधर्म का निर्वहन करता हुआ शब्द-यज्ञ प्रतीत होता है।

इस पत्रिका और इसके वर्तमान अंक का सबसे मार्मिक, ऐतिहासिक और विचारणीय पक्ष इसकी असाधारण भौगोलिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि है। दक्षिण भारत के उस प्रांत में, जहाँ भाषाई राजनीति और तमिल अस्मिता की प्रचंड आँधियाँ दशकों से इस कदर उग्र रही हैं कि वे हिन्दी के दीपक की लौ तो दूर, उसे टिमटिमाते हुए भी नहीं देखना चाहते, वहाँ इस पत्रिका के माध्यम से हिन्दी की अखंड ज्योति प्रज्वलित रखना किसी भगीरथ प्रयास से कम नहीं है। तमिलनाडु की पुण्यभूमि अपनी सहस्राब्दियों पुरानी संगम-परंपरा, विपुल ज्ञानराशि और गौरवमयी भाषा के लिए निसंदेह वंदनीय है, किंतु दुर्भाग्यवश क्षेत्रीय संकीर्णताओं और राजनीतिक दुराग्रहों के चलते वहाँ हिन्दी के विरुद्ध जो आक्रामक और दुर्भेद्य दीवारें खड़ी की गईं, उसने राष्ट्र की दो महान सांस्कृतिक धाराओं के बीच एक अस्वाभाविक वैमनस्य की खाई पैदा कर दी।

ऐसे प्रतिकूल और संवेदनशील वातावरण में, जहाँ हिन्दी का सामान्य उच्चारण भी प्रायः तीखे प्रतिरोध का कारण बन जाता है, वहाँ हिन्दी भाषा और साहित्य की एक गरिमामयी पत्रिका को निरंतर संजोना, उसका संपादन-प्रकाशन करना और उसे पाठकों तक पहुँचाना असीम नैतिक बल, अदम्य साहस और एक तपस्वी जैसी निष्ठा की माँग करता है ।

'शबरी' के इस अंक के पृष्ठों से गुजरते हुए यह तथ्य स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि संपादक मंडल ने संकीर्णता और विद्वेष का उत्तर कभी कटुता से नहीं, बल्कि उदारता, सहिष्णुता और उच्च कोटि के साहित्यिक विमर्श से दिया है । यह पत्रिका उस भाषाई आँधी के सम्मुख एक ऐसे सुदृढ़ दीपस्तंभ की भाँति अडिग खड़ी है, जो बिना किसी कंपकंपाहट के अपनी रश्मियाँ बिखेर रहा है । यह इस शाश्वत सत्य को पुनर्स्थापित करता है कि साहित्य भूगोल की सीमाओं और राजनीतिक नारों से कहीं अधिक व्यापक होता है; वह सीधे आत्मा से संवाद करता है । दक्षिण के इस अंचल में हिन्दी का यह दीपस्तंभ केवल एक भाषा का प्रतिनिधित्व नहीं करता, बल्कि यह संपूर्ण भारत की सांस्कृतिक अखंडता, राष्ट्रीय चेतना और भावनात्मक एकात्मता की प्राणवायु बनकर स्पंदित हो रहा है ।

अक्टूबर 2026 अंक की संपादकीय दृष्टि अत्यंत प्रौढ़, संतुलित और युगबोध से संपृक्त है । संपादकीय आलेख में संपादक ने भाषा को किसी भी प्रकार के प्रभुत्व अथवा संघर्ष का अस्त्र मानने के बजाय उसे परस्पर आत्मीयता, संवाद और समरसता का परम माध्यम स्वीकार किया है । यह संपादकीय दक्षिण और उत्तर के सांस्कृतिक अंतर्संबंधों को सुदृढ़ करने का आह्वान करता है और यह सिद्ध करता है कि अपनी मातृभाषा के प्रति अटूट प्रेम का अर्थ दूसरी समृद्ध भाषा के प्रति घृणा कदापि नहीं हो सकता । विचार जब निष्कपट हृदय और सौहार्द की कोख से जन्म लेते हैं, तो वे प्रांतीय संकीर्णताओं की हर चट्टान को पिघलाने का सामर्थ्य रखते हैं, और यही इस अंक का मुख्य वैचारिक स्वर है ।

काव्य-पक्ष की दृष्टि से विचार करें तो पत्रिका का यह अंक अत्यंत समृद्ध और बहुरंगी है । इसमें पारंपरिक छंदबद्धता के अनुशासन से लेकर समकालीन भावबोध की मुक्त रचनाओं का ऐसा संतुलित समन्वय है जो पाठक के अंतस को झंकृत करता है । कविताओं में व्यक्तिगत अनुभूतियों, सामाजिक विसंगतियों और मानवीय संवेदनाओं की मार्मिक अभिव्यक्ति के साथ-साथ राष्ट्रीय चेतना और स्वाभिमान का ओजस्वी स्वर भी अनुस्यूत है । गीतों और मुक्तकों में प्रयुक्त बिंब-विधान अत्यंत ताज़ा और सहज हैं । कई रचनाओं में प्रतीक्षा, विस्थापन, मातृभूमि और भाषा-प्रेम को शबरी के रूपक के माध्यम से जिस कारुणिक और उदात्त शैली में प्रस्तुत किया गया है, वह सीधे मर्म का स्पर्श करता है ।

पत्रिका का गद्य-खंड भी अपनी वैचारिक गहराई और अकादमिक गरिमा के कारण विशेष ध्यान आकर्षित करता है । इस अंक में संकलित निबंध और शोधपरक आलेख सतही चर्चाओं से परे जाकर गंभीर विमर्श प्रस्तुत करते हैं । विशेष रूप से संत तिरुवल्लुवर के 'तिरुक्कुरल' और उत्तर भारत के कबीर, तुलसी तथा सूर के भक्ति-दर्शन के अंतर्संबंधों पर

केंद्रित तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत श्लाघनीय और संग्रहणीय बन पड़ा है । यह विवेचन इस सत्य को अकाट्य रूप से प्रमाणित करता है कि दक्षिण के भक्ति आंदोलन और उत्तर के संत साहित्य की आत्मा एक ही मूल स्रोत से प्रस्फुटित हुई है । इसके साथ ही, अनुवाद की महत्ता और भारतीय भाषाओं के पारस्परिक संवाद पर प्रकाशित आलेख यह दर्शाते हैं कि साहित्यिक आदान-प्रदान ही भाषाई संकीर्णता की एकमात्र अचूक औषधि है ।

कथा-साहित्य और संस्मरण के धरातल पर भी यह अंक अत्यंत जीवंत प्रतीत होता है । कहानियों में दक्षिण भारत के लोकजीवन, वहाँ के ग्रामीण परिवेश, मानवीय द्वंद्व और सांस्कृतिक महक को हिन्दी की प्रांजल शब्दावली में बहुत सजीव ढंग से उकेरा गया है । संस्मरण खंड तो पाठक की आँखें नम कर देनेवाला है, जहाँ अहिन्दी भाषी अंचल में हिंदी सिखाने, बोलने और प्रचारित करने के दौरान झेले गए सामाजिक उपहास, अनगिनत संघर्षों और अंततः भाषा के प्रति उपजे अनुराग की सत्य घटनाओं को अत्यंत निश्छल भाव से लिपिबद्ध किया गया है । यह आख्यान केवल एक व्यक्ति का संघर्ष नहीं, बल्कि दक्षिण में हिन्दी के अस्तित्व का मूक इतिहास बयान करता है ।

भाषा-शिल्प और संप्रेषणीयता के निकष पर परखें तो 'शबरी' की भाषा अपनी प्रांजलता, गरिमा और सहज प्रवाह के कारण अद्वितीय है । इसमें संस्कृतनिष्ठ तत्सम पदावली का औचित्यपूर्ण सौंदर्य तो है ही, साथ ही बोलचाल की सुबोधता भी सुरक्षित है, जिससे भाव-संप्रेषण में कहीं भी अवरोध नहीं आता । वाक्य-विन्यास सुगठित हैं और विचारों में अद्भुत तारतम्यता देखने को मिलती है । इसके अतिरिक्त, पत्रिका का बाह्य कलेवर, आवरण पृष्ठ की सौम्यता, सुरुचिपूर्ण लेआउट और शुद्ध मुद्रण इसके संपादकीय कौशल और कलात्मक दृष्टि की गवाही देते हैं ।

समग्रतः, साहित्यिक पत्रकारिता के इतिहास में ऐसे प्रयास सदैव स्वर्णाक्षरों में अंकित होते हैं जो प्रतिकूल परिस्थितियों के सम्मुख नतमस्तक होने के बजाय अपनी निष्ठा से नया इतिहास रचते हैं । 'शबरी' का यह अंक केवल एक पत्रिका का प्रकाशन नहीं, बल्कि प्रतिकूलताओं के बीच प्रज्वलित एक सांस्कृतिक और साहित्यिक महाक्रांति है । जहाँ विरोध की आँधियाँ भीषण हों और हिन्दी को मिटाने की चेष्टाएँ प्रबल रही हों, वहाँ यह पत्रिका यह उद्घोष करती है कि निष्काम साधना और सत्यनिष्ठ प्रेम के समक्ष कोई भी अवरोध टिक नहीं सकता । संपादक, रचनाकार और इस संकल्प के समस्त पुरोधा इस अद्वितीय, साहसिक और ऐतिहासिक साहित्यिक अवदान के लिए हार्दिक साधुवाद के पात्र हैं । यह अंक समकालीन हिन्दी पत्रकारिता के क्षितिज पर एक जाज्वल्यमान मील का पत्थर सिद्ध होगा ।

-आचार्य प्रताप

आपका यह प्रयास रंग लाये और भाषाई एकजुटता कायम रहे, यही शुभकामना रखता हूँ । आपकी पत्रिका बहुत सुन्दर और ज्ञानवर्द्धक है । मंगलकामना ।

- डॉ प्रदीप कुमार दास,
नालन्दा, बिहार

पत्रिका को देखा । कई हिन्दी भाषियों की रचनाओं भी इसमें शामिल हैं, यह एक

समवेशी और सात्विक विचार है । मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ !

दक्षिण भारत की संस्कृति और पूजा पद्धति मुझे सदैव आकर्षित करती रही है । हाल में ही मैंने यह जाना कि तमिल शैवों और अन्य भारतीय शैव संप्रदायों की मान्यताओं तथा शिव पूजन पद्धति में गहरा अंतर है ।

उत्तर भारत की शिव पूजा जहाँ संस्कृत के मंत्रों की गुरुगंभीर ध्वनियों, रुद्राभिषेक की अविरल धाराओं और 'शिव ही जीव है' के अद्वैत महावाक्यों से स्पंदित होती है; वहीं सुदूर दक्षिण की तमिल शैव धरा पर पूजा का हृदय संस्कृत के श्लोकों में नहीं, बल्कि 63 नयनमार संतों की आँखों से बहे आँसुओं और उनके होठों से निकले तमिल भजनों – 'तेवरम' और 'तिरुवाचकम' – में धड़कता है । जब तमिल मंदिरों के गर्भगृह के सम्मुख 'ओदुवार' गायक सुरीले रागों में इन भक्ति–गीतों का गान करते हैं, तो पाषाण मूर्तियाँ भी विगलित हो उठती हैं ।

सादर प्रणाम !

– श्री. राजकिशोर सिन्हा,
दिल्ली

शबरी पत्रिका का अक्तूबर 2026 का अंक प्राप्त हुआ, बहुत बहुत बधाई । इस अंक में प्रकाशित सभी लेख, कविता आदि उच्च स्तरीय हैं । संपादकीय में आप ने सबसे अच्छी बात कही है कि समय बहुत बदल गया, जिओ और जीने दो । मेरे पास शब्द नहीं है किन शब्दों में तारीफ़ करूँ । मेरी बहुत बहुत हार्दिक शुभकामनाएँ कि पत्रिका विश्व स्तर पर पहुँचे । साधुवाद ।

– श्री. जयनारायण सोनी, इंदौर, म.प्र.

निश्चित रूप से पत्रिका शबरी उत्कृष्ट रचनाओं का संयोजन है, संपादक मंडल को बहुत बहुत बधाइयाँ, हिन्दी से संबंधित कृतियों को भारत भर के कलम के सिपाहियों की रचनाओं को स्थान दिया है, देववाणी संस्कृत के यथायोग्य समावेश ने सोने में सुहागा उक्ति को चरितार्थ किया है, आप साधुवाद के पात्र हैं ।

– श्री. सुरेश शर्मा,
भरतपुर, राजस्थान

आदरणीय, नमस्कार । आपका बहुत–बहुत आभार, शुक्रिया और हृदय से अभिवादन । शबरी के शानदार और सफलतम शैक्षिक सालाना जलसे के लिए शबरी टीम को बहुत–बहुत बधाइयाँ ।

– श्री. नलिन खोईवाल,
इंदौर, म.प्र.

अमृत हिन्दी, निर्मल संस्कृत,
अतुल तमिल की वाहिका...
शबरी शिक्षा समाचार पत्रिका...
इस साहित्य यात्रा में जुड़िए...
और साहित्यकारों को जोड़िए...

नवांकुर



मेरे प्यारे पापा

– हमसिका कुमारी,
चारवीं कक्षा, न्यू स्टेवार्ट स्कूल,
कटक, ओड़िशा

पापा वह छाँव है,जो धूप मे साया है देते
बिना बोले ही हर दर्द को अपना लेते ।
न कभी माँगा कुछ,न कभी जताया,
चुपचाप हर ख्वाब हमारा सजाया ।
डाँट मे उनकी छुपी होती है ममता,
उनकी सलाह में होती दुनिया की शिक्षा !
पापा है एक अहसास हिम्मत का है नाम
पापा मैं आपका सदा करती हूँ सम्मान ।



माँ की ममता

– अद्विका राऊत,
चारवीं कक्षा, न्यू स्टेवार्ट स्कूल,
कटक, ओड़िशा

माँ की ममता जैसी मीठी,
न है कुछ भी दुनिया में ऐसी ।
रबड़ी, कुल्फी, आइसक्रीम,
चाहे जलेबी ही क्यों न हो वैसी ।
माँ जितना भी है डाँटती,
उतना ही फिर स्नेह करती !
सारी दुनिया से लड़ जाती,
पर अपने बच्चे को बचाती !
बच्चे को बुखार हो जब-जब
रात-रात भर जागती रहती।
माँ तो भगवान है का रूप,
माँ तो सबकी जननी है होती ।
बचपन से लेकर, वृद्ध होने तक
वही हमारा, सदा ध्यान है रखती ।



बस थोड़ा और

– प्रजित. जे. संतोष,
सी.ऐ.टी. कॉलेज,
कोवै, तमिलनाडु

कितना भी कर लो, लोग कहेंगे,
''थोड़ा और बेहतर कर सकते थे,
थोड़ी और मेहनत कर लेते,
कुछ और अच्छा कर सकते थे ।''
हर बार उनकी बातें सुनकर,
क्यों अपने दिल को दुखाना है ?
उनकी बातों को बोझ नहीं,
अपनी ताकत बनाना है ।
उन्हें कहने दो, तुम कम हो,
उन्हें कहने दो, तुम पीछे हो,
तुम चुपचाप खुद को बेहतर बनाओ,
और अपनी मंज़िल की ओर बढ़ते जाओ ।
हर ताना एक सीख बन जाए,
हर आलोचना एक राह दिखाए,
जो बातें कल तुम्हें तोड़ती थीं,
वही कल तुम्हें मजबूत बनाएँ ।
तुम्हें हर किसी को जवाब नहीं देना,
न हर बात पर सफाई देनी है,
बस कल के अपने आप से बेहतर बनना,
यही जीत तुम्हें हासिल करनी है ।
क्योंकि लोग तो कहते रहेंगे,
आज भी, कल भी, हर दिन,
पर उनकी बातों से टूटना नहीं,
उन्हीं से अपनी ताकत चुनना ।



सीखने की न कोई उम्र है, न कोई अंत

– शंकर वेंकटेश्वरन,
एलायंस यूनिवर्सिटी, बंगलुरु, कर्नाटक

एक दिन सचिन तेंदुलकर एक होटल में ठहरे हुए थे। उन्होंने वहाँ कॉफी ऑर्डर की। जब वेटर कॉफी लेकर उनके पास आया, तो उसने एक सवाल पूछा।

उसने कहा, सर, क्या मैं आपको आपकी बैटिंग स्टाइल को लेकर एक सुझाव दे सकता हूँ ?

सचिन चाहते तो वेटर की बात को अनसुना कर सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने उसे अपनी बात आगे रखने का मौका दिया।

तब वेटर ने कहा, सर, जब भी आप बैटिंग करते हैं, तो ऐसा लगता है कि आपका एल्बो गार्ड आपके हाथों की मूवमेंट को रोकता है और आपकी बैटिंग में बाधा डालता है।

हैरानी की बात यह थी कि सचिन को यह छोटी-सी परेशानी काफी समय से थी, लेकिन उनके साथ खेलनेवाले किसी खिलाड़ी, कोच या करीबी व्यक्ति ने इस पर ध्यान नहीं दिया था। एक होटल में काम करनेवाले वेटर ने इस छोटी-सी कमी को पहचान लिया और उन्हें इसके बारे में बताया।

वेटर की बात सुनने के बाद सचिन ने अपने एल्बो गार्ड के डिज़ाइन को जाँचा और उस पर ध्यान दिया।

अब ज़रा इस घटना से मिलनेवाली सीख के बारे में सोचिए।

हममें से हर कोई अपनी ज़िंदगी में कभी न कभी किसी परिस्थिति में फँस जाता है। हम लगातार मेहनत करते हैं, लेकिन उम्मीद के मुताबिक परिणाम नहीं मिलते। बिज़नेस में ग्रोथ नहीं आती, मुनाफ़ा नहीं होता या फिर हमारे काम में बार-बार रुकावटें आती हैं।

कई बार इसकी वजह कोई बड़ी समस्या नहीं, बल्कि हमारी कुछ छोटी-छोटी गलतियाँ होती हैं। उन गलतियों को कोई भी पहचान सकता है। हो सकता है कि वह हमारा जूनियर हो, परिवार का सदस्य हो, टीम मेंबर हो या फिर कोई बाहरी व्यक्ति।

आखिर सचिन तेंदुलकर को भी एक वेटर से ही ऐसा सुझाव मिला था, जिसने उन्हें अपनी एक छोटी-सी कमी पर ध्यान देने में मदद की।

लेकिन हमारी गलती क्या है ? इस सवाल को एक बार खुद से पूछकर देखिए।

जब कोई हमें कुछ समझाने या सुझाव देने की कोशिश करता है, तो कई बार हमारा अहंकार बीच में आ जाता है। हम सोचने लगते हैं कि आखिर यह व्यक्ति हमें क्या सिखाएगा ? और इसी अहंकार की वजह से हम उसकी बात सुने बिना ही उसे नज़रअंदाज़ कर देते हैं।

इसका मतलब यह बिलकुल नहीं है कि हमें हर किसी की हर बात मान लेनी चाहिए। लेकिन अगर किसी की बात में कोई अच्छा सुझाव, उपयोगी समाधान या सही रास्ता दिखाई देता है, तो केवल अपने अहंकार की वजह से उसे नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए।

– श्रीमती. अलमेलु कृष्णन, चेन्नै, तमिलनाडु

पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्

उद्दण्डः अश्वः कृशश्च अश्वः

कस्मिंश्चित् ग्रामे कश्चन अश्वविक्रेता आसीत् । तस्य नाम कन्दनः आसीत् ।

सः स्वस्य अश्वं विक्रेतुं विपणिं प्रति नीतवान् । सः अश्वः अतीव उद्दण्डः आसीत् । सः कस्यापि वशे न तिष्ठति स्म । अतः कन्दनः तम् अश्वम् अतीव सावधानतया नयति स्म ।

रात्रौ सः एकस्यां धर्मशालायां निवासं कर्तुं बाध्यः अभवत् । समीपस्थस्य वृक्षस्य अधः अश्वं बद्ध्वा कन्दनः भोजनं कृत्वा विश्रामं कुर्वन् आसीत् ।

तस्मिन्नेव समये तेन मार्गेण अन्यः कश्चन अश्वविक्रेता तत्र आगतः । सः एकं कृशं दुर्बलम् अश्वम् आनयन् आसीत् । सः निरुपयोगिनम् अश्वं कथमपि विपण्यां विक्रेतुम् इच्छति स्म । तस्य मनसि अयमेव विचारः आसीत् ।

सः नवागतः अश्वविक्रेता उद्दण्डः अश्वः यत्र बद्धः आसीत्, तस्यैव वृक्षस्य अधः तस्य समीपे स्वस्य कृशं दुर्बलम् अश्वं बद्धुं प्रयत्नम् अकरोत् ।

तत्क्षणमेव कन्दनः तं नवागतम् अश्वविक्रेतारम् असूचयत् – ''महोदय ! मम अश्वः अतीव उद्दण्डः अस्ति । तस्य समीपे भवतः अश्वं मा बध्नातु । यदि तत्र बध्नाति, तर्हि भवतः अश्वस्य प्राणानामपि संकटं भवितुम् अर्हति । सावधानः भवतु !'' इति अवदत् ।

किन्तु सः नवागतः तस्य वचनं सर्वथा न अशृणोत् । सः जानन्नेव स्वस्य कृशं दुर्बलम् अश्वं तस्यैव वृक्षस्य अधः अबध्नात् ।

कन्दनः तं पुनः पुनः सावधानम् अकरोत् । तथापि सः नवागतः तस्य वचनं न अशृणोत् । अतः कन्दनः तूष्णीम् अभवत् ।

अर्धरात्रिः अभवत् । उभौ अश्वविक्रेतारौ गाढनिद्रायां सुप्तौ आस्ताम् । किन्तु उद्दण्डः अश्वः तं कृशम् अश्वं दृष्ट्वा, पादाभ्यां प्रहृत्य च अनेकधा आहतवान् ।

परेद्युः प्रभातम् अभवत् । मरणासन्नं स्वस्य कृशम् अश्वं दृष्ट्वा नवागतः

अश्वविक्रेता अत्यन्तं विस्मितः अभवत् ।

सः कन्दनम् अवदत् – ''भवतः उद्दण्डस्य अश्वस्य आक्रमणेनैव मम अश्वस्य एषा दुर्दशा अभवत् । अतः भवान् मह्यं क्षतिपूर्तिं दातुम् अर्हति ।''

किन्तु कन्दनः तस्य आग्रहं न अङ्गीकृतवान् ।

''अत्र मम कश्चिदपि दोषः नास्ति । अहं भवन्तं पूर्वमेव सावधानम् अकरवम् । तथापि भवान् मम वचनम् अनादृत्य स्वस्य कृशम् अश्वं जानन्नेव तस्य वृक्षस्य अधः अबध्नात् । अतः अयं भवतः एव दोषः, न तु मम ।'' एवम् उक्त्वा कन्दनः क्षतिपूर्तिं दातुं निराकृतवान् ।

ततः नवागतः अश्वविक्रेता तत्क्षणमेव न्यायाधीशस्य समीपं विवादं नीतवान् । सः स्वस्य कृशम् अश्वं नीत्वा न्यायाधीशाय दर्शितवान् ।

तत्क्षणमेव न्यायाधीशस्य मनसि अत्यधिकः क्रोधः उत्पन्नः अभवत् । सः घटितस्य घटनाक्रमस्य विषये कन्दनम् अपृच्छत् । कन्दनः तु मौनमेव अवलम्ब्य तस्थौ ।

न्यायाधीशः बहुकालं यावत् पुनः पुनः अपृच्छत्, तथापि कन्दनः किमपि प्रत्युत्तरं न दत्तवान् । सः मौनमेव अतिष्ठत् ।

तदा न्यायाधीशः दयया अवदत्– ''अहो ! अयं बधिरः इव न, अपि तु मूकः इव प्रतिभाति !''

तत्क्षणमेव नवागतः अश्वविक्रेता अवदत् – ''नहि, महोदय ! अयं नाटयति । अयं सम्यक् वक्तुं शक्नोति । 'भवतः अश्वं मम अश्वस्य समीपे मा बध्नातु । सः उद्दण्डः अश्वः अस्ति । भवतः अश्वस्य प्राणानाम् आपद् भवितुम् अर्हति' इति पूर्वम् अयं मां स्पष्टतया अवदत् । इदानीं तु मूकः इव अभिनयन् भवन्तं सम्यक् वञ्चयति ।''

ततः न्यायाधीशः वस्तुस्थितिम् अवगतम् । सः निर्णयम् अददात् – ''कन्दनः नवागताय अश्वविक्रेतृणे किमपि क्षतिपूर्तिं दातुं न अर्हति ।'' इति उक्त्वा सः प्रकरणं निरस्तवान् ।

नवागतः अश्वविक्रेता प्रत्युत्तरं दातुम् अशक्तः सन् लज्जया अधोमुखः तस्मात् स्थानात् निर्गतः ।

कथायाः नीतिः कदाचित् मौनमपि बुद्धिमत्तायाः लक्षणं भवति इति अवगतम् किम् ?

தமிழமுது – பீடு பெற நில்

- எம். ஸ்ரீதர்,
நிறுவனர் : சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம், தமிழ்நாடு

மனித வாழ்வு தனித்துவமானது. இந்த உலகில் பிறக்கின்ற ஒவ்வொரு உயிரும் தன் இனத்திற்கும், குணத்திற்கும் ஏற்றவாறு வாழ்வை தொடங்கி வாழ்வை முடித்துக் கொள்கின்றன. மனிதன் சிந்திக்க தெரிந்தவன். பல அதிசயங்களை சந்திக்க தெரிந்தவன். இன்னல்களையும் இடர்பாடுகளையும் எவ்வாறு தவிர்க்கலாம் என ஆராய்ந்து தெரிய வல்லவன்.

உலகில் பிறக்கும் ஒவ்வொரு மனிதனுக்கும் கிட்டத்தட்ட சமமான ஆற்றலையே இயற்கையானது வழங்குகிறது. வாய்ப்புகளும், வசதிகளும் மனிதனின் உழைப்பும் சரியான பாதையின் தேர்வும், அவர்களை வெற்றியாளர்களாகவோ அல்லது வீழ்ந்து மடிப்பவர்களாகவோ மாற்றி விடுகிறது.

இவ்வுலகில் வாரிசுகளாக பிறந்து அதனாலே வசதிகள் அனைத்தையும் பெற்றவர்கள் சிலர் உண்டு. வாய்ப்புகளை வெற்றி படிகள் ஆக்கி வசந்த மாளிகைகளுக்கு சொந்தமானவர்கள் சிலர் உண்டு. திறமையும் தகுதியும் இருந்தும் வாய்ப்புகள் கிடைக்காமல் வாடி மரித்தவர்கள் சிலர் உண்டு.

தன்னுடைய விடாமுயற்சியாலும் ,தொடர்ந்த மற்றும் சிறந்த உழைப்பினால் உயர்ந்த உத்தமர்களும் சிலர் உண்டு. மனிதன் தன்னுடைய பாதையை தேர்ந்தெடுப்பதில் சிறந்தவனாக விளங்கினால் அவனுடைய வாழ்க்கையும் சிறந்ததாகவே முடியும். சரியான வார்த்தையை தேர்ந்தெடுத்துக் கொண்டு முறையான வாழ்க்கையை நடத்தும் போது முன்னேற்றமானது நிச்சயம் உண்டு. அதனால் தான் ஔவையார் **பீடு பெற நில்** என்கிறார் அதாவது பெருமைமிகு செயல்களை செய்து, வெற்றியாளனாக உன்னுடைய வாழ்க்கையை வழிநடத்து, அதற்கான சரியான பாதையை நீ அமைத்துகொள் என்கிறார். பெருமைமிகு செயல்களை செய்வோம் ஊரார் போற்றிடும் உன்னதமான வாழ்க்கையை வாழ்ந்திடுவோம்.

தொடரும்...



அருள் உலா
திருமுறைத் திருத்தல யாத்திரை
திருச் சிவபுரம்

- கயிலைத்திருவடி 'யுவதூத்'

Dr. **என். சந்திரசேகர்,** M.A., B.Ed., Ph.D., சேலம், தமிழ்நாடு

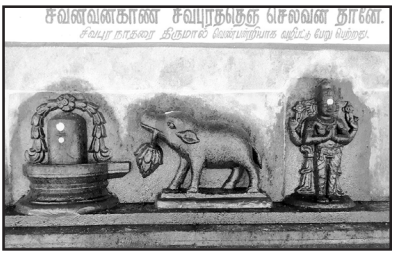


சுருதிகள் பலநல முதல்கலை
துகளறு வகைபயில் வொடுமிது
உருவிய லுலகவை புகழ்தர
வழியொழு குமெயுறு பொறியொழி
அருதவ முயல்பவர் தனதடி
யடைவகை நினையர னுறைபதி
திருவளர் சிவபுரம் நினைபவர்
திகழ்குலன் நிலனிடை நிகழுமே

- ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தர் அருளிய முதலாம் திருமுறைப் பாடல்

சிவபுரம் என்று இறைவன் திருப்பெயராலேயே அமைந்த சிறப்புக்கு உரியது இந்த திருத்தலம். மேலும் இந்த திவ்ய திருத்தலமானது குபேரபுரம், பூகயிலாயம், சண்பகாரண்யம் எனப் பல பெயர்களாலும் சிறப்பிக்கப்படுகின்றது. காவிரி நதியின் தென்கரையில் அமைந்துள்ள திருமுறைத் திருத்தலங்களுள் இத்தலம் 67-ஆவது திருத்தலம் ஆகும்.

அருள் வரலாறு :



ஒரு முறை நந்தி தேவர் கொடுத்த சாவபம் அகல ஸ்ரீமஹா விஷ்ணு வானவர் வெண்பன்றி உருவில் இத்தலத்து ஈசனை வழிபட்டு சாபம் நீங்கப் பெற்றதாகத் தல வரலாறு கூறுகின்றது.

மேலும் ஒருமுறை இராவணன் தூய்மைக் குறைவுடன் திருக்கயிலாயத்திற்குள் நுழைய முயன்றான். ஆகையால் நந்தி தேவர் அவனைத் தடுத்தார். ஆனால் குபேரன் நந்திதேவரிடம் இராவணனுக்கு ஆதரவாகப் பேசினான்.

இதனால் கோபமடைந்த நந்திதேவர், குபேரனை பூலோகத்தில் பிறக்க சாபமிட்டார். நந்திதேவர் சாபம் காரணமாக பூலோகத்தில் தனபதி என்ற வணிகனாகப் பிறந்த குபேரன் இங்கு வந்து ஸ்ரீ சிவபெருமானை வணங்கி வழிபட்டு சாபம் நீங்கப்பெற்று மீண்டும் தேவருலகம் சென்றான். எனவே இத்தலம் குபேரபுரம் எனவும் அழைக்கப்படுகிறது.

இந்திரன், இந்திராணி, அக்னி முதலான தேவர்களும் வந்து வழிபட்ட பெருமைமிகு திருத்தலம் சிவபுரம்.

குபேரன் வழிபட்டு அருள்பெற்றதால் இத்தலத்து ஈசன் சிவகுருநாதர் என்ற திருநாமமும் பெற்றார்.

சிறப்புக்கள் :

1. ஒவ்வொரு ஆண்டும் சித்திரை மாதம் 4, 5, 6 தேதிகளில் சூரிய ஒளியானது ஸ்வாமி மீது படுவது சிறப்பு.
2. இத்தலத்தில் ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தர், ஸ்ரீ நாவுக்கரசர், ஸ்ரீ சுந்தரர், ஸ்ரீ மணிவாசகர் ஆகிய சமயக்குரவர் நால்வருடன் ஸ்ரீ சுந்தரின் மனைவி பறவையாரும் காட்சி தருகின்றார்.
3. இவ்வூரில் பட்டினத்துப் பிள்ளையார் கோயிலில் பட்டினத்தார் திருவுருவச்சிலை உள்ளது. பட்டினத்தாரின் சகோதரி இவ்வூரில் வாழ்ந்ததாகக் கூறப்படுகிறது.
4. இந்தத் திருக்கோயிலில் வருடந்தோறும் தீபாவளியன்று நடைபெறும் குபேரபூஜை சிறப்பு.
5. அங்கப்ரதக்ஷிண நேர்த்திக்கடன் செலுத்தப்படும் சிவாலயம் என்ற பெருமையும் இத்தலத்திற்கு உண்டு.
6. தக்ஷிணமூர்த்தி காலடியில் முயல்களுடன் ராகுவும் கிடக்கின்றார்.
7. இந்த திருத்தலத்தில் ஒரு அடிக்கு ஒரு சிவலிங்கம் பூமிக்கடியில் இருப்பதால் இந்த ஊருக்கு வந்த ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தர் ஊரில் கால்படாமல் அங்கப்ரதக்ஷிணமாக வந்து இறைவனை வழிபட்டுப் பிறகு ஊர் எல்லையைத் தாண்டிச் சென்று பதிகம் பாடினார் என வரலாறு கூறுகின்றது.
8. ஸ்ரீ பைரவருக்குத் தனிக்கோயில் உள்ளது. தேய்பிறை அஷ்டமியில் உளுந்து வடை, தயிர்சாத நிவேதனம் ப்ரஸித்தம்.

ஸ்ரீ ஸ்வாமி - ஸ்ரீ அம்பாள் :

இறைவன் : ஸ்ரீ சிவபுரீஷ்வரர் (எ) ஸ்ரீ சிவபுரநாதர் (எ) ஸ்ரீ சிவகுருநாத ஸ்வாமி

இறைவி : ஸ்ரீ ஆர்யாம்பாள் (எ) சிங்காரவல்லி

தீர்த்தம் : சந்த்ர தீர்த்தம், அரிசில் ஆறு

தலமரம் : சண்பக மரம்

வழிபட்டு அருள் பெற்றோர் : ஸ்ரீ மஹாவிஷ்ணு, இராவணன், குபேரன், அருணகிரிநாதர், பட்டினத்தார் முதலானோர்

அருட்பதிகங்கள் :

ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தர் மற்றும் ஸ்ரீ நாவுக்கரசர் ஆகியோர் இத்தலத்து ஈசனைப் பதிகங்கள் பாடி மகிழ்ந்துள்ளனர்.

அருணகிரிநாதரும் இத்தலத்தில் அருளும் முருகன் மீது திருப்புகழ் பாடியுள்ளார்.

ஸ்ரீ நடராஜர் :

இத்தலத்தில் இருந்த கலைநயமும் அழகும் மிகுந்த ஸ்ரீ நடராஜர்-சிவகாமி பஞ்சலோகத் திருமேனி அமெரிக்காவிற்கு கடத்தப்பட்டது. பிறகு மத்திய் அரசின் தலையீட்டால் இருவரும் மீண்டும் ஆலயம் வந்துள்ளனர்.

தரிசன காலம் :

காலை 06.00 மணி - பகல் 11.00 மணி வரை

மாலை 04.30 மணி - இரவு 08.00 மணி வரை



தொடர்புத் தொலைபேசி எண் :

9865306840

தொடர்பு முகவரி :

ஸ்ரீ சிவகுருநாத ஸ்வாமி திருக்கோயில்,
சிவபுரம், சாக்கோட்டை (அஞ்சல்),
கும்பகோணம் (வட்டம்),
தஞ்சாவூர் மாவட்டம் - 612 401.

அமைவிடம் :

ஜகத்குரு ஸ்ரீ ஆதிசங்கரர் அவர்களின் திருத்தாயார் ஆர்யாம்பிகை பிறந்த தலமாகவும் கருதப்படும் இந்த திருச்சிவபுரம் தேவார பாடல்பெற்ற ஸ்தலமானது

கும்பகோணம்-திருவாரூர் சாலையில் சாக்கோட்டை என்னும் ஊரில் இருந்து சுமார் 2 கி.மீ. தொலைவில் அமைந்துள்ளது.



ஸ்ரீ ஆர்யாம்பா ஸமேத
ஸ்ரீ சிவபுரீஷ்வர பரப்ரஹ்மணே நம:

... அருள் உலா தொடர்கிறது.

Scan this QR code to follow
SHABARI BOOK SALES, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

Scan this QR code to follow
SHABARI SIKSHA SANSTHAN, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

Gandhiji's Q & A

(Based on D.B.H.P. Sabha, Chennai)

Parichaya ..... ₹50/-
(Based on D.B.H.P. Sabha, Trichy)
Prathamic ..... ₹50/-
Madhyama ..... ₹70/-
Rashtrabhasha ..... ₹70/-
Praveshika ..... ₹120/-
Visharad Poorvardh .... ₹120/-
Visharad Uttarardh ..... ₹120/-
Praveen Poorvardh ..... ₹120/-
Praveen Uttarardh ..... ₹120/-

Model Question Paper

Parichaya (4 Models) .....₹20/-
Prathamic (4 Models) .....₹40/-
Madhyama (2 Models) .....₹80/-
Rashtrabhasha (2 Models) ..₹80/-

Shabari Siksha Samachar, Salem

Form IV (See Rule 8)

Statement about ownership and other particulars about Shabari Siksha Samachar (according to Form IV. Rule 8 circulated by the Registrar of Newspaper for India).

1.	Place of Publication	:	Salem - 636 001
2.	Periodicity of its Publication	:	Monthly
3.	Printer's Name	:	D. Sivakumar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636 001.
4.	Publisher's Name	:	M. Sridhar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	37, First Agraharam, Salem - 636 001.
5.	Editor's Name	:	M. Venkateswaran
	Nationality	:	Indian
	Address	:	197, Second Agraharam, Salem - 636 001.
6.	Name & Address of the individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than 1 % of the capital	:	M. Sridhar Owner & Publisher 37, First Agraharam, Salem - 636 001.

I, M. Sridhar, hereby declare the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd.

Date : 05.11.2026. **M. Sridhar**

Signature of the Publisher

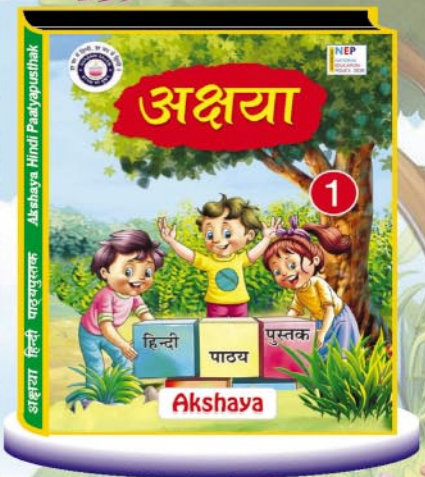
शबरी परिवार से एक और भेंट

अक्षया हिन्दी पाठ्यपुस्तक

बाल कक्षाओं से पाँचवीं कक्षा तक के छात्रों के लिए

आज ही खरीदें...
Get your copies now...

- मन भावन शैली
- सामाजिक मूल्यों पर आधारित
- सरल और ज्ञानवर्धक अभ्यास
- भाषा कौशल पर आधारित
- सृजन तथा चिंतना शक्तिवर्धक
- सरल तथा शुद्ध भाषा
- छात्रों में रुचि उत्पादक
- अभिभावक का प्रिय पुस्तक
- श्रेष्ठ अध्यापक का मन मोह पुस्तक



Shabari Book House proudly presents

Akshaya Hindi Paatyapusthak

a new series of Hindi third language books that inspire the learner

- Captivating storytelling
- Value-driven lessons
- Engaging book exercises
- Enhanced language proficiency
- Boosts creativity & critical thinking
- Lucid, effective language
- Sparks student curiosity
- Parent-friendly content
- The best teachers' Choice

Price

LKG	₹ 90/-
UKG	₹ 100/-
Std-1	₹ 150/-
Std-2	₹ 150/-
Std-3	₹ 150/-
Std-4	₹ 150/-
Std-5	₹ 150/-

SHABARI BOOK HOUSE

"Shabari Palace"
194, Second Agraharam,
Salem - 636 001.
Whatsapp : 94431-65414
Phone : 94433-65414,
98427-65414
Visit us at https://books.shabari.org/

Posted at Salem HPO 636 001. November-2026

Published on 5th November-2026

Posted on 6th & 7th of every month. R.N.I. No. : TNMUL/1999/00402
Postal Reg. No. : TN/WR/SLM(E)/121/2024-2026
Licenced to post without prepayment. TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024-2026

कृपया सभी पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या का अवश्य उल्लेख करें।
அனைத்து கடித போக்குவரத்துகளிலும் தங்களுடைய உறுப்பினர் எண்ணை தவறாமல் குறிப்பிடவும்.
Please quote your subscription number in all correspondences.

If undelivered please return to
Shabari Siksha Samachar,
A.O. 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.

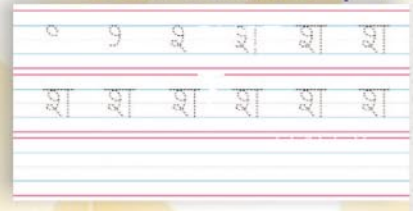
To

DON'T TEAR THE LABEL IF UNDELIVERED

Shublekha

Hindi Hand Writing Book

Learn the letters | Write it properly
Let us all write | Loving the letters
Best Practice | Perfect result for the beginners.





₹ 100.00

SHABARI BOOK HOUSE
"Shabari Palace", 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.
✆ **94431-65414**
✆ 94433-65414, 98427-65414
Visit us at https://books.shabari.org